सेन्ट्रल मंथन

• खंड 7 • अंक - 4 • दिसंबर, 2022

G20
भारत 2023 INDIA

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

दिनांक 14.10.2022 को केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित हिंदी दिवस कार्यक्रम में उद्बोधन देते हुए श्री एम.वी. राव, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी.

दिनांक 14.10.2022 को केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह में अखिल भारतीय हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेताओं के साथ बायें से श्री आलोक श्रीवास्तव, कार्यपालक निदेशक, श्री एम.वी. राव, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं श्री विवेक वाही, कार्यपालक निदेशक.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही गृह-पत्रिका

प्रकाशन तिथि : 21 फरवरी, 2023 • खंड 7 • अंक - 4 • दिसंबर, 2022

प्रधान संरक्षक

श्री एम. वी. राव
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

संरक्षक

श्री विवेक वाही
कार्यपालक निदेशक

श्री राजीव पुरी
कार्यपालक निदेशक

श्री एम. वी. मुरली कृष्णा
कार्यपालक निदेशक

उप संरक्षक

श्री स्मृति रंजन दाश
महाप्रबंधक (मासंवि / राजभाषा)

संपादक

श्री राजीव वार्ष्णेय
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

सहायक संपादक

सु-श्री छाया पुराणिक
सु-श्री अनिता धुर्वे
श्री सन्नी कुमार

विषय-सूची

- प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री एम.वी. राव का संदेश 2
- कार्यपालक निदेशक, श्री विवेक वाही का संदेश 3
- कार्यपालक निदेशक, श्री राजीव पुरी का संदेश 4
- कार्यपालक निदेशक, श्री एम वी मुरली कृष्ण का संदेश 5
- महाप्रबंधक (राजभाषा) का संदेश 6
- संपादकीय 7
- गुजरात का प्रमुख त्यौहार - रण उत्सव कच्छ 8
- विजयवाडा - सांस्कृतिक नगर 10
- केरल का मुख्य पर्व - ओणम 11
- जलपाईगुड़ी की सांस्कृतिक विरासत 13
- लोक उत्सव - फसल कटाई के विभिन्न भारतीय त्योहार 15
- लोक उत्सवों का महत्व 16
- लोक उत्सव की विविधता 18
- वसूली प्रबंधन 20
- सांस्कृतिक विरासत 21
- कविता - रंग दर्पण 23
- लोकोत्सव - एक सांस्कृतिक धरोहर 24
- वर्तमान युग में नेतृत्व विकास की चुनौतियां और सम्भावनाएं 26
- संक्रांति: आंध्र प्रदेश का लोक उत्सव 28
- डिजिटल युग में कंप्यूटर अनुवाद का योगदान 31
- राजभाषा गतिविधियां 36
- केन्द्रीय कार्यालय के हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह की कुछ झलकियां. 37
- हमारे विभिन्न अंचलों द्वारा हिंदी दिवस समारोह का अयोजन 39

ई-मेल/Email : centralmanthan@centralbank.co.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार अनिवार्यत: बैंक के नहीं हैं.

डिज़ाइन, संपादन तथा प्रकाशन : राजीव वार्ष्णेय, सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा, एम.जी.रोड, फोर्ट, मुंबई - 400 023 के लिए तथा उनके द्वारा उचीथ ग्राफिक प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड. आइडियल इंडस्ट्रीयल इस्टेट, मथुरादास मिल्स कंपाऊंड, सेनापती बापट मार्ग, लोअर परेल, मुंबई - 400 013.

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री एम.वी. राव का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

नववर्ष की ढेरों बधाई एवं आगामी पर्वों की हार्दिक शुभकामनाएं,

भारत विविधता में एकता वाला राष्ट्र है. यहां अनेकों भाषाएं हैं, अनेक प्रकार के पहनावे हैं. इसके साथ-साथ अनेकों प्रकार के उत्सव, पर्व, त्योहार तथा मेले इत्यादि का आयोजन होता रहता है. भारतवासी इन सभी आयोजन में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हैं.

जैसा कि आप सब जानते हैं कि वर्तमान वित्त वर्ष 2022-23 की अंतिम तिमाही चल रही है तथा वित्त वर्ष के समापन में अब अधिक समय नहीं बचा है. ऐसे में हमारा पूरा ध्यान हमारे कॉर्पोरेट लक्ष्यों को प्राप्त करने की ओर केन्द्रित होना चाहिए.

वर्तमान वित्त वर्ष की पहली तीन तिमाहियों में हमारे बैंक का प्रदर्शन सराहनीय रहा है. तथापि, हमारे सामने अभी बहुत कुछ करना शेष है. हमें कासा जमाओं अर्थात् घरेलू बचत खातों एवं चालू जमा खातों को बढ़ाने के अधिकतम संभव प्रयास करने चाहिए, जिससे हमारी कासा जमा राशि में वृद्धि हो. कासा जमा वृद्धि हमारी जमा लागत को कम करने में सहायक होती है.

इसके अतिरिक्त अब हमारा ध्यान बैंक द्वारा प्रदान की जा रही डिजिटल बैंकिंग सेवाओं की ओर अपने ग्राहकों को प्रेरित और प्रोत्साहित करने पर भी होना चाहिए. हम जितनी अधिक संख्या में अपने ग्राहकों को हमारी डिजिटल बैंकिंग सेवाओं से जोड़ेगें, हमारी लाभप्रदता उतनी ही बढ़ेगी. ग्राहकों को डिजिटल बैंकिंग सेवा बहुत सुविधाजनक होती है. इससे ग्राहक को शाखा परिसर में आने की आवश्यकता नहीं होती है. ग्राहक का समय और श्रम दोनों बचता है. इसके अतिरिक्त, हम अपनी ग्राहक - सेवा को भी बेहतर कर पाते हैं.

आइए, हम वित्त वर्ष 2022 - 23 के सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में उत्साहपूर्वक कार्य करें और समस्त लक्ष्यों को बड़े मार्जिन से प्राप्त करें.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(एम. वी. राव)

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

कार्यपालक निदेशक, श्री विवेक वाही का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

नववर्ष 2023 की हार्दिक शुभकामनाएं,

कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक एवं कच्छ से लेकर अरूणाचल प्रदेश तक भारत राष्ट्र सांस्कृतिक रूप से अनेकानेक विविधताओं को अपने अंदर समाहित किए हुए है. यहां जगह-जगह भांति-भांति के उत्सव होते रहते हैं. जगह-जगह लोक उत्सव मनाए जाते हैं. पर्व एवं त्योहार तो पूरे वर्ष मनाए जाते हैं.

जैसा हम सब जानते हैं कि हमारा बैंक अब प्रगति की ओर अग्रसर हो चला है, इस वित्त वर्ष 2022-23 की पहली तीन तिमाहियों में हमारे बैंक का कार्य-निष्पादन सराहनीय रहा है. अब हमें अपने बैंक को सफलता के शीर्ष पर ले जाना होगा. इसके लिए हमें अपनी जमाओं विशेषकर कासा जमाओं को बढ़ाने पर जोर देना होगा. हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम अपनी ग्राहक - सेवा को उत्कृष्टता के सर्वोच्च स्तर तक लेकर जाए. जिससे हमारे वर्तमान ग्राहक संतुष्ट होकर और नए ग्राहकों को हमारे साथ जोड़े. अपने परिवार के सदस्यों के खाते हमारे यहां खुलवाए. बैंक का व्यवसाय बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि हम अपने ग्राहकों को उत्कृष्ट ग्राहक - सेवा प्रदान करें, उनकी पूछताछ सहजता से पूरी करें और ग्राहकों को अपनेपन की अनुभूति करवाएं. जब हम मिल-जुलकर एक टीम के रूप में कार्य करेंगे तो परिणाम ही बेहतर होंगे.

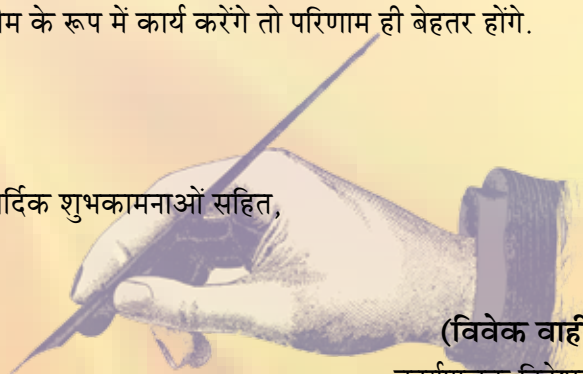

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(विवेक वाही)
कार्यपालक निदेशक

कार्यपालक निदेशक, श्री राजीव पुरी का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

आगामी पर्वों तथा त्योहारों की हार्दिक शुभकामनाएं,

भारत राष्ट्र विश्व में कई दृष्टि से एक विशिष्ट राष्ट्र है. भारत वर्ष में हर दिन कोई न कोई उत्सव होता है. यहां के लोग हर समय उत्सव के मूड में रहते है. यहां पर तरह-तरह के उत्सव मनाये जाते हैं, तरह-तरह के पर्व मनाये जाते हैं, त्योहार मनाये जाते हैं. वास्तव में हमारा प्रिय देश भारत उत्सवों का देश है. उत्सव ही नहीं लोक उत्सव भी यहां के लोगों को अत्याधिक प्रिय हैं और यही उत्सव - लोक उत्सव तो भारत की सांस्कृतिक विरासत के अभिन्न भाग हैं.

हम एक व्यवसायिक बैंक में कार्यरत है. हम भलीभांति जानते हैं कि बैंकिंग व्यवसाय करना हमारा कर्तव्य है. हमारा व्यवसाय निरंतर बढ़ाया जाना भी आवश्यक है. हम यह भी जानते हैं कि अधिक व्यवसाय करके ही अधिक लाभ कमाया जा सकता है. अन्ततः अधिक लाभ कमाना ही तो हमारा उद्देश्य होता है. बैंक के व्यवसाय के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक स्तर पर सभी प्रकार के कॉर्पोरेट लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए. सभी क्षेत्रीय कार्यालय तथा आंचलिक कार्यालय को अपने-अपने सभी लक्ष्यों को बड़े मार्जिन से प्राप्त करने पर ही बैंक द्वारा अपना कॉर्पोरेट लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है. इसके लिए हमें हर संभव प्रयास करना चाहिए.

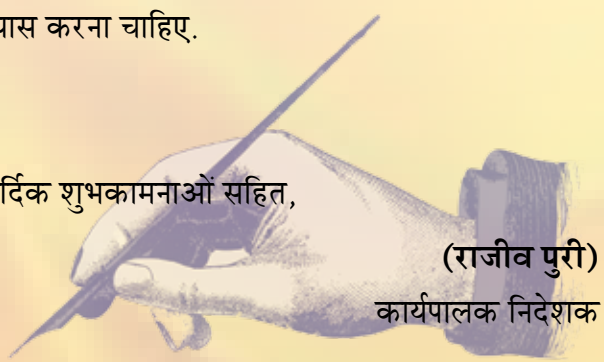

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(राजीव पुरी)
कार्यपालक निदेशक

कार्यपालक निदेशक, श्री एम वी मुरली कृष्ण का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

आगामी पर्वों की हार्दिक शुभकामनाएं,

दिनांक 01/12/2022 को सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया में मेरे कार्यग्रहण करने पर आप सभी सेन्ट्रलाइट साथियों द्वारा बहुत उत्साहपूर्वक मेरा स्वागत किया गया मैं उसके प्रति आपका आभार व्यक्त करता हूं.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया देश का पहला स्वदेशी बैंक है जो एक सौ ग्यारह वर्ष से अधिक समय से देश के आर्थिक विकास में अपना योगदान दे रहा है. इसके 31 हज़ार से अधिक समर्पित सेन्ट्रलाइट देश के कोने-कोने में कार्यरत हमारी शाखाओं के माध्यम से समाज के सभी वर्गों के आर्थिक उत्थान हेतु कार्य कर रहे हैं.

आज हमारे बैंक के पास सभी वर्गों की आवश्यकताओं के अनुसार ऋण और जमा उत्पाद है. बैंक बहुत तेजी से डिजिटल ट्रांसफोर्मेशन की ओर अग्रसर है. हमारे डिजिटल उत्पादों की लोकप्रियता भी तेजी से बढ़ रही है. फिर भी हमारे सभी डिजिटल उत्पादों को और अधिक लोकप्रिय बनाना आवश्यक है.

सेंट्रल मंथन का यह अंक लोक उत्सव पर आधारित है. लोक उत्सव समाज में उत्साह, उमंग और हर्ष का संचार करते हैं. हमें अपनी परम्पराओं के अनुसार आयोजित होने वाले ऐसे लोक उत्सवों में सहज सहभागिता करनी चाहिए. हमारे लिए यह भी आवश्यक है कि हम अपने देश की सांस्कृतिक विरासत को संभाल कर रखें तथा उसे निरंतर समृद्ध करते रहें.

शुभकामनाओं सहित,

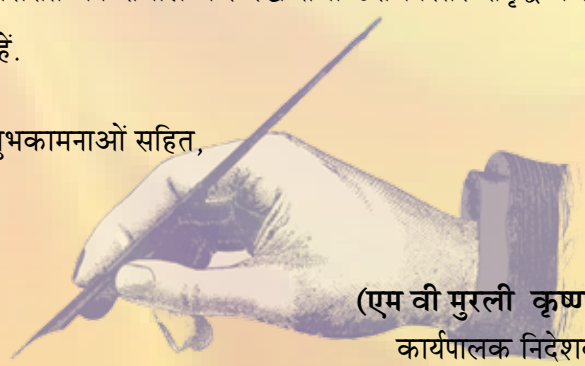

(एम वी मुरली कृष्ण)
कार्यपालक निदेशक

महाप्रबंधक (राजभाषा) का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

आगामी पर्वों एवं नववर्ष की अनेकानेक शुभकामनाएं,

भारत एक सांस्कृतिक विविधताओं वाला राष्ट्र है. यहां हर दिन उत्सव है, हर दिन तरह-तरह के त्योहार हैं. वर्ष भर कहीं न कहीं त्योहारों की धूम चलती रहती है.

भारत के अनेक पर्व व त्योहार लोक उत्सव के रूप में भी मनाए जाते हैं. ऐसे लोक उत्सव के दौरान उस क्षेत्र विशेष में लोगों का उत्साह देखते ही बनता है. वास्तव में लोक उत्सव जनमानस के मन में उत्साह तो उत्पन्न करते ही हैं, समाज में नयी चेतना भी जागृत करते हैं. इनसे परम्पराओं को जीवंत रखते हुए कुछ नया करने का जोश भी बना रहता है.

वैसे भी हमारा प्रिय देश भारत सांस्कृतिक रूप से बहुत अधिक समृद्ध है. महान भारत की सांस्कृतिक समृद्धि पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती रही है. सदियों से दुनिया भर के पर्यटक भारत के सांस्कृतिक समृद्धि से आकर्षित होकर भारत आते रहे हैं. वे यहां की संस्कृति देखते हैं और उत्सवों में सहभागी भी होते हैं तथा आनंद प्राप्त करते हैं.

हमारे देश के लोक उत्सव भी सांस्कृतिक विरासत का ही एक भाग है और हम सभी भारतीयों को इस पर गर्व होना चाहिए. इसके अतिरिक्त हम सब का उत्तरदायित्व है कि हम अपने महान भारत की सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखें, लोक उत्सवों को मनाते रहें. साथ ही, सांस्कृतिक प्रतीकों को यथावत बनाए रखें. जिससे हमारे महान भारत की सांस्कृतिक समृद्धि विश्व भर को अपनी ओर आकर्षित और प्रभावित करती रहे.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(स्मृति रंजन दाश)
महाप्रबंधक - राजभाषा

संपादकीय

प्रिय साथियो,

आगामी पर्वों एवं त्योहारों की हार्दिक शुभकामनाएं,

भारत सहित विश्व के किसी भी समाज में लोक उत्सवों का बड़ा महत्व होता है. लोक उत्सव उस समाज और राष्ट्र की संस्कृति के संवाहक का कार्य करते हैं. लोक उत्सवों के माध्यम से समाज की पुरानी पीढ़ी अपनी परंपराओं एवं सांस्कृतिक विरासत से नयी पीढ़ी को परिचित कराती है. एक ओर नयी पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक विरासत से परिचित होती है, वहीं दूसरी ओर उसके विविध रंगों से आनंदित भी होती है.

सही अर्थों में लोक उत्सवों के माध्यम से उस भौगोलिक क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत की झलक दिखायी पड़ती है. इस अवसर पर होने वाले आयोजन सबको आकर्षित करते हैं. नागरिकों में नए उत्साह का संचार करते हैं. नागरिकों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का भाव भी उत्पन्न करते हैं. सर्वत्र हर्ष और उमंग का वातावरण भी उत्पन्न करते हैं.

हमारा देश भारत विश्व भर में अपनी संस्कृति, उत्सवों, पर्वों तथा मेलों इत्यादि के लिए सदियों से जाना जाता रहा है. हमारे पूर्वजों ने भी भारत की सांस्कृतिक विरासत को निरंतर समृद्ध किया है. अब वर्तमान पीढ़ी का भी यह दायित्व बनता है कि वे अपनी सांस्कृतिक धरोहर को न केवल बनाये रखे, किन्तु इसे लगातार समृद्ध भी करती रहे. जिससे विश्वभर में हमारे देश भारत की एक विशिष्ट पहचान बनी रहे. अन्य तथ्यों के साथ-साथ हमारा देश भारत सांस्कृतिक समृद्धि के क्षेत्र में सदैव उत्कृष्टता के शिखर पर बना रहे.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

राजीव वार्ष्णेय
सहायक महाप्रबंधक - राजभाषा

आज़ादी का अमृत महोत्सव

गुजरात का प्रमुख त्यौहार - रण उत्सव कच्छ

- श्री सत्येन्द्र सिंह
मुख्य प्रबंधक
मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय

कच्छ का रण यह एक सफेद रेगिस्तान है. यह गुजरात के कच्छ में अरब सागर से 100 किलोमीटर दूर एक सफेद रेत से भरा मैदान है, जो उत्तरी दिशा में पाकिस्तान की सरहद तक फैला हुआ है. कहा जाता है कि कच्छ का रण अरब सागर का ही भाग है, जो भूकंप के कारण अपने तल से उपर आया है. यह रण गुजरात प्रांत के कच्छ जिले के उत्तर में है. यह एक दलदली क्षेत्र है. बारिश के दौरान यहाँ पानी रहता है. हर साल अक्टूबर में यह सूखना शुरु हो जाता है, फिर यह जगह रेगिस्तान का रुप ले लेती है. यहाँ 01 नबम्बर से 20 फरवरी तक रण उत्सव मनाया जाता है. यह 100 दिन चलने वाला सबसे लंबा रण उत्सव होता है.

गुजरात के कच्छ में मनाया जाने वाला रण उत्सव एक प्रमुख त्यौहार है. जो गुजरात की लोक संस्कृति को दर्शाता है. यह उत्सव चांदनी रात में कच्छ के रेगिस्तान में आयोजित किया जाता है. इसे देखने के लिए विदेश से भी बहुत पर्यटक आते हैं. यहाँ रहने के लिए बहुत सारे टेंट बने हुए है. अपने बजट के अनुसार आप टेंट की सुविधा ले सकते हैं. टेंट के बीच में खुला मैदान रहता है. मैदान में चांदनी रात में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है. जिसमें लोक नृत्य जैसे गरबा, नाटक, संगीत प्रदर्शन, स्थानीय कला आदि कार्यक्रम होते हैं. हस्तकला यानि हाथ से बनाए हुए वस्तुएँ, कच्छी व्यंजन आदि भी शामिल है. आप यहाँ ऊंट की सवारी, गुब्बारे की सवारी, राइफल शूटिंग आदि भी कर सकते हैं.

रण उत्सव में रात में खुले आकाश के नीचे चांदनी रात का अनुभव करना बहुत ही शानदार है. यह उत्सव संगीत,मस्ती, नृत्य आदि का संगम है. संगीत और नृत्य यह मन को बहलाने का अच्छा साधन है. संगीत और नृत्य का परिदृश्य यहाँ हमें देखने मिलता है. इस रण महोत्सव की शुरुवात अपने प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा साल 2006 में की गई. पहले यह उत्सव 3 दिवसीय कार्यक्रम के रुप में शुरु हुआ था लेकिन आज वह 100 दिवसीय कार्यक्रम बन गया है. पूरे देश भर के लोग यहाँ पर्यटन के उद्देश्य से आते हैं.

इस त्यौहार के दौरान लगभग 400 तंबुओं का एक पूरा शहर बसाया जाता है. उसमें रहने के लिए सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती है. अपने बजट के अनुसार हम तंबु ले सकते हैं. कच्छ का यह रण दुनिया के सबसे बड़े नमक के रेगिस्तान में से एक है.

रण महोत्सव के दौरान आप कच्छ में और भी जगहों पर घूम सकते हैं :

कच्छ म्यूजियम - भुज शहर के एक प्राचीन किले में यह म्यूजियम है. इस म्यूजियम में लोक कला, प्राचीन कलाकृति एवं आदिवासी लोगों के बारे में जानकारी का संग्रह है. पुराने वस्त्र, हथियार रखे हुए हैं. यहाँ का मुख्य आकर्षण है ''ऐरावत'' की मूर्ति.

स्वामीनारायण मंदिर - यह मंदिर कच्छ का प्रसिद्ध मंदिर है. यह शानदार सफेद संगमरमर और मूर्तियों के साथ खूबसूरत मंदिर है. इसकी अपनी एक अलग राजसी भव्यता है.

कच्छ अभयारण्य - यह अभयारण्य रेगिस्तान में एक अनोखा अभयारण्य है. यहाँ असंख्य पक्षियों तथा जानवरों का घर है. यहाँ आपको नील गाय, ब्लैकबक्स, चिंकारा, सफेद पेलिकन, एवोकेट तथा जलपक्षी भी देखने मिलेंगे. कच्छ के रण में आपको एक अनोखा प्राणी भी देखने मिलेगा जिसे खच्चर कहा जाता है. यहाँ अनेक प्रकार की वनस्पतियाँ भी देखने को मिलेगी.

माता का मठ - कच्छ जिले के भुज शहर से करीब 50 किलो मीटर की दूरी पर एक प्राचीन एवं विशाल मठ / मंदिर है जो अपनी सिद्धि एवं मान्यता के लिए काफी प्रसिद्ध है. चैत्र एवं शारदीय नवरात्री के दौरान राज्य के विभिन्न शहरों से लोग पैदल यहाँ माता

के दर्शन के लिए आते हैं और कच्छ जिले की ओर से पैदल यात्रियों के लिए रात्रि ठहराव की व्यवस्था काफी लोकप्रिय है. सभी लोग अपनी समर्थता के अनुसार बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं.

मांडवी बीच - यह एक पुराना ऐतिहासिक बंदरगाह है. यहाँ वॉटर स्पोर्टस् भी कर सकते हैं. यह भी पर्यटक लोगों का पसंदीदा जगह है.

धोलावीरा - धोलावीरा में हडप्पा सभ्यता देखने मिलती है. यहाँ हडप्पा के अवशेष हैं. जिससे हमें हडप्पा के इतिहास के बारे में पता चलता है.

मरीन नेशनल पार्क - यह कच्छ का समुद्री राष्ट्रीय उद्यान है. जो एक प्रसिद्ध स्थान है. यह मरीन नेशनल पार्क जलीय जानवरों का घर है. यहाँ आप विभिन्न जलचर प्रजातियाँ देख सकेंगे.

आईना महल - इस आईना महल को हॉल ऑफ मिरर्स के रुप में भी जाना जाता है. यहाँ आपको वेनिस शैली के झूमर,चांदी की वस्तुएँ आदि वास्तुकला आकर्षित करती है.

कच्छी बांधणी एवं शाल - प्राचीन काल से ही कच्छ के लोगों द्वारा सामान्य कपड़े के ऊपर कच्चे धागों से डिजाइन के अनुसार कपड़े को बांधा जाता है. फिर उसे अलग-अलग पक्के रंगों में डुबाया जाता है. इस प्रकार लेडीज सूट एवं साड़ियां तैयार की जाती है. कश्मीर की भांति कच्छ में भी विभिन्न लोक कला को प्रदर्शित करती हुई सर्दियों में प्रयोग होने वाली शाल का भी निर्माण किया जाता है. सामान्यत: कच्छ के पिछड़े वर्गों के लोगों के लिए यह एक अच्छी आजीविका का स्त्रोत है. रण उत्सव के दौरान स्थानीय लोगों द्वारा कई प्रकार के सजावट के साथ इनके स्टॉल भी लगाये जाते हैं.

इसके अलावा और भी जगह है जैसे सोमनाथ मंदिर, नारायण सरोवर, रोहा किला, कंठकोट किला, सोयोट की गुफाएँ, भद्रेश्वर जैन मंदिर.

कच्छ के रण में आप ऊंट की सवारी, गोल्फ कोर्ट, पैरा मोटरिंग,सेगवे सवारी एवं मकर संक्रांती पर पतंगबाजी का आनंद ले सकते हैं. शॉपिंग के बारे में कहा जाए तो रण महोत्सव में आपको कच्छी की सभी चीजें मिलेगी. हस्तशिल्प, सोने के आभूषण, कच्छी कढ़ाई, चांदी के बर्तन, तांबे की घंटी, बांधनी साडी, मिट्टी के बर्तन, सजावट के सामान आदि है. खाने में आपको सभी प्रकार की डिश मिल जायेगी, लेकिन यहाँ का स्पेशल फूड है काठियावाड खाना, खास कर कच्छी दाबेली. रण उत्सव सांस्कृतिक लोकाचार का समामेलन है.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

विजयवाडा - सांस्कृतिक नगर

- अर्पण बाजपेयी
प्रबंधक राजभाषा
क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाडा

विजयवाडा का इतिहास पौराणिक काल से विकसित माना जाता है. किंवदंतियों के अनुसार महाभारत काल में पांडवों के भाईयों में से एक अर्जुन ने भगवान शिव का आशीर्वाद लेने के लिए इंद्रकिला पहाडी पर प्रार्थना की थी तब भगवान एक शिकारी के रूप में उनके सामने प्रकट हुए और उन्हें पाशुपतास्त्र नामक एक अस्त्र प्रदान किया. इस प्रकार भगवान शिव के साथ अपनी जीत के उपलक्ष्य में अर्जुन ने यहां विजयेश्वर स्थापित किया और इस क्षेत्र को बाद में विजयवाता या विजयवाडा कहा जाने लगा. पुरातात्विक साक्ष्यों से यह भी पता चलता है कि यह शहर पाषाण युग से अस्तित्व में था और इसे साबित करने के लिए कृष्णा नदी के पार कई अवशेष प्राप्त हुए हैं. विजयवाडा के ऐतिहासिक काल का पता भारत में कल्याणी के चालुक्यों के शासनकाल से भी लगाया जा सकता है. इस समय के दौरान कृष्णदेव राय, चालुक्य के राज्य के शासक थे जिन्होंने शहर को धार्मिक और सांस्कृतिक राजधानी के रूप में नामित किया था. 639 ईसवी में प्रसिद्ध चीनी यात्री हुआन त्सांग ने भी विजयवाडा के इस सांस्कृतिक शहर का दौरा किया था. 1900 में, इस क्षेत्र में ब्रिटिश शासन स्थापित हो गया था और उस समय के दौरान शहर अच्छी तरह से विकसित हुआ था और शहर में बुनियादी ढांचे और प्रमुख सुविधाओं के संबंध में महत्वपूर्ण बदलाव लाए गए थे. प्रकाशम बैराज की प्रसिद्ध परियोजना और कृष्णा नदी पर एक रेलवे पुल विजयवाडा में ब्रिटिश शासन के दौरान किये गये प्रयासों का परिणाम था.

विजयवाडा एक सांस्कृतिक शहर है जहां लोग सभ्य, विनम्र और मेहनती हैं. ये हमेशा दूसरों की मदद के लिए तैयार रहते हैं. लोग आम तौर पर पारंपरिकता के स्पर्श के साथ शहरी जीवन शैली को अपनाते हैं.

विजयवाडा में सभी धर्मों के लोग निवास करते हैं. तेलगु शहर की सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है, हालांकि तमिल, हिंदी और अंग्रेजी भी बोली जाती है.

कृष्णा पुष्करम कृष्णा नदी के पवित्र तट पर विजयवाडा का सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार है. शहर में निर्माता संक्रांति भी बहुत धूमधाम से मनाई जाती है. इसके अलावा होली, दिवाली, ईद, क्रिसमस जैसे कई अन्य त्यौहार भी शहर में मनाए जाते हैं जो विजयवाडा के लोगों की जीवंत संस्कृति और परंपरा की जानकारी देते हैं. विजयवाडा शहर अपनी लिप-स्मूदी, मसालेदार भोजन विशेषताओं के लिए जाना जाता है. इडली और डोसा जैसे पारंपरिक दक्षिण भारतीय व्यंजनों के साथ, शहर के व्यंजन निश्चित रूप से अपने मसालेदार अचार और कच्चे आम और मिर्च की चटनी के साथ मिलते हैं. विजयवाडा का व्यंजन अपनी समृद्ध सुगंध, रंग और तीखेपन के लिए देश भर में लोकप्रिय है. विजयवाडा में अनेक स्थान घूमने के लिए प्रसिद्ध हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं, जैसे अमरावती, कनक दुर्गामंदिर, मंगलगिरी, उंदावल्ली गुफाएं, प्रकाशम बैरेज, कोंडापल्ली किला, मोगलराजपुरम गुफाएं, लेनिन की मूर्ति,भवानी द्वीप, विक्टोरिया संग्रहालय आदि. विजयवाडा तक ट्रेन एवं हवाई जहाज दोनों माध्यम से पहुँचा जा सकता है.

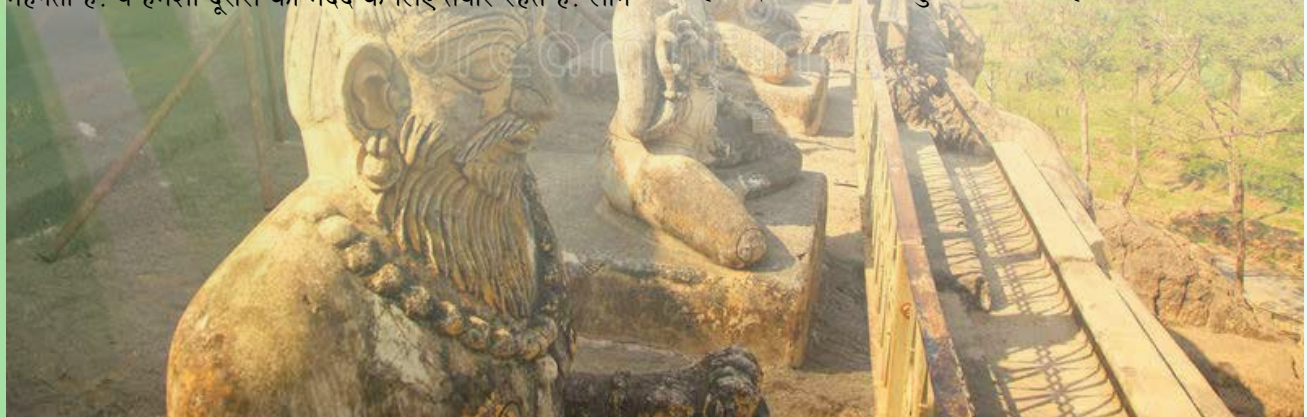

आज़ादी का अमृत महोत्सव

केरल का मुख्य पर्व - ओणम

- मीनू देवन
सहायक प्रबंधक-राजभाषा
क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्चि

ओणम एक वार्षिक भारतीय फसल उत्सव है जो मुख्य रूप से केरल के हिंदुओं द्वारा मनाया जाता है. यह राज्य का आधिकारिक त्योहार है. हिंदू किंवदंतियों के अनुसार, ओणम केरल में एक पौराणिक राजा जिसने कभी केरल पर शासन किया था. दैत्य राजा महाबली के शासन काल के सुशासन की याद में मनाया जाता है, हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, राजा महाबली भक्त प्रहलाद के पुत्र विरोचन के बेटे थे. भक्त प्रहलाद हिरण्य कश्यप के पुत्र तथा ऋषि कश्यप के पोते थे. किंवदंती है कि महाबली की लोकप्रियता और उसकी शक्ति से ईर्ष्या करते हुए, देवताओं ने उसके शासन को समाप्त करने की साजिश रची. उन्होंने भगवान विष्णु को वामन नामक एक बौने ब्राह्मण के रूप में पृथ्वी पर भेजा. वामन ने उदार महाबली से अपनी इच्छा के रूप में महाबली से तीन पग भूमि मांगी . चूंकि ब्राह्मण को उपहार देने से इनकार करना अपवित्र माना जाता है, महाबली वामन की इच्छा पूरा करने के लिए सहमत हुए. वामन ने पहले दो चरणों में ब्रह्मांड की संपूर्णता को माप लिया, तीसरा पैर रखने के लिए कहीं भी स्थान नहीं छोड़ा. महाबली ने इच्छा पूरी करने के लिए अपने तीसरे चरण को रखने के लिए अपने सिर की पेशकश की. हालाँकि, महाबली ने भगवान विष्णु से हर साल एक बार अपनी भूमि और लोगों से मिलने की इच्छा व्यक्त की. महाबली की इस घर वापसी को हर साल केरल में ओणम के रूप में मनाया जाता है.

ओणम त्योहार के दौरान मावेली को ओनाथप्पन के रूप में पूजा जाता है.

ओणम चिंगम के महीने में आता है, जो मलयालम कैलेंडर के अनुसार पहला महीना है . उत्सव मलयालम नव वर्ष को चिन्हित करता है, दस दिन चलता है और थिरुवोनम के साथ समाप्त होता है. दस दिनों को क्रमिक रूप से अत्तम, चित्तिरा, चोधी, विशाखम, अनिज़म, त्रिक्केट्टा, मूलम, पूराडम, उतराडम और तिरुवोनम के रूप में जाना जाता है. पहला और आखिरी दिन विशेष रूप से केरल और मलयाली समुदायों के लिए महत्वपूर्ण है. अत्तम दिन को वामनमूर्ति थिक्काकारा मंदिर (कोच्चि) में उत्सव की शुरुआत होती है. इस विष्णु मंदिर को ओणम का केंद्र और महाबली का निवास माना जाता है, जिसमें त्योहार का झंडा फहराया जाता है. परेड आयोजित की जाती हैं, जो रंगीन होती हैं और झांकियों के साथ केरल की संस्कृति के तत्वों को दर्शाती हैं. पुक्कलम, प्रार्थना, खरीदारी, भोजन दान करने से लेकर दावतों में परिवार के साथ समय बिताने तक विविध प्रकार के समारोह और गतिविधियाँ होती हैं . पुरुष और महिलाएं पारंपरिक पोशाक पहनते हैं. केरल की साड़ी या कसावू साड़ी इस दिन विशेष रूप से पहनी जाती है.

पुक्कलम (पुष्प रंगोली) बिछाने का पारंपरिक अनुष्ठान अथम के दिन से शुरू होता है. इस दिन पुक्कलम को अत्तप्पू कहा जाता है, और यह आकार में अपेक्षाकृत छोटा होता है. ओणम त्योहार के प्रत्येक दिन के साथ पुक्कलम का आकार उत्तरोत्तर आकार में बढ़ता जाता है. अत्तम पर केवल पीले फूलों का उपयोग किया जाता है, केवल एक गोलाकार परत बनाई जाती है और डिजाइन को सरल रखा जाता है. इस दिन प्रत्येक घर के प्रवेश द्वार पर महाबली और वामन की मूर्तियाँ भी स्थापित की जाती हैं. परंपरागत रूप से, अत्तपुक्कलम में केरल के स्थानिक फूल और दशपुष्पम (10-फूल)

शामिल थे, लेकिन आजकल सभी प्रकार के फूलों का उपयोग किया जाता है. पूरे केरल में, ओणम के दिन पुकलम प्रतियोगिताएं एक आम दृश्य हैं.

तिरुवातिरा, कुम्मटटीकली, पुलिकली सहित पारंपरिक नृत्य रूप थुल्लल, ओणम कली आदि ओणम पर्व के भाग हैं. तिरुवाथिराकली एक महिला नृत्य है जो एक दीपक के चारों ओर एक घेरे में किया जाता है. कुम्माट्टिकली ओणम नृत्य का एक रूप है जहां खिलाड़ी खुद को एक खंभे या पेड़ या दीपक के चारों ओर हलकों में व्यवस्थित करते हैं, फिर रामायण और अन्य महाकाव्यों से प्राप्त गीत गाते हैं और नृत्य करते हैं . पुलिक्कली ओणम के पर्व में एक आम दृश्य है. चमकीले पीले, लाल और काले रंग में बाघ की तरह चित्रित कलाकार ढोल जैसे वाद्य यंत्रों की थाप पर नृत्य करते हैं . यह लोक कला मुख्य रूप से त्रिशूर के सांस्कृतिक जिले में प्रदर्शित की जाती है और हजारों लोग इस कला का हिस्सा बनने के लिए शहर में आते हैं.

वल्लमकली (स्नेक बोट रेस) एक अन्य घटना है जो ओणम का पर्याय है. दूर-दूर से स्त्री-पुरुष पानी में दौड़ती हुई सर्प नौका को देखने और उसका उत्साह बढ़ाने के लिए आते हैं. यह घटना विशेष रूप से पम्पा नदी पर चित्रित की जाती है, जिसे पवित्र माना जाता है और केरल गंगा नदी के समकक्ष है.

ओणम सद्या (दावत) ओणम का एक और अनिवार्य हिस्सा है, और लगभग हर केरलवासी या तो इसे बनाता है या इसमें शामिल होता है. ओणम सद्या मौसम की भावना को दर्शाता है और पारंपरिक रूप से मौसमी सब्जियों से बनाया जाता है. दावत को केले के पत्तों पर परोसा जाता है.

आम तौर पर, ओणम समारोह का सबसे बड़ा हिस्सा थिरुवोणम पर समाप्त होता है . हालाँकि, थिरुवोनम के बाद के दो दिन तीसरे और चौथे ओणम के रूप में भी मनाए जाते हैं. तीसरा ओणम, जिसे अविट्टम कहा जाता है, राजा महाबली के स्वर्ग लौटने की तैयारी का प्रतीक है. दिन का मुख्य अनुष्ठान पिछले 10 दिनों के दौरान हर पुक्कलम के बीच में रखी गई ओनाथप्पन मूर्ति को लेना और उसे पास की नदियों या समुद्र में विसर्जित करना है . इस अनुष्ठान के बाद पुक्कलम को साफ करके हटा दिया जाता है. कुल मिलाकर, ओणम एक ऐसा त्यौहार है जो केरल के सभी लोगों को एकजुट करता है. यह एक ऐसा पर्व है जो हमारी बनाई सभी सीमाओं को मिटा देता है. यह त्योहार अनेकता में एकता का प्रतीक है.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

जलपाईगुड़ी की सांस्कृतिक विरासत

- सरोज कुमार छेत्री
मुख्य प्रबंधक

जलपाईगुड़ी नाम 'जलपाई' शब्द से आया है जिसका अर्थ है जैतून और 'गुरी' का अर्थ है स्थान - क्योंकि इस क्षेत्र में कभी कई जैतून के पेड़ थे. नाम के साथ-साथ पूरे क्षेत्र के पीठासीन देवता (शिव) 'जलपेश' के साथ जुड़ा हुआ है. वर्तमान समय के जलपाईगुड़ी जिले का गठन करने वाली भौगोलिक सीमाएं इतिहास के विभिन्न चरणों के दौरान या तो टुकड़ों में या पूरे के रूप में विभिन्न राजवंशों के नियंत्रण (प्रशासन) या शासन के अधीन थीं.

जंगलों की शांति में, पहाड़ियों के धुंधले पर्दे से परे या इधर-उधर बहने वाली धाराओं से विभिन्न संस्कृतियाँ विकसित और समृद्ध हुईं जैसे - भूटिया संस्कृति, राजबंशी संस्कृति, रावस, लेप्चा-लिम्बु संस्कृति, साथ ही साथ कोच, मेच, रावस, टोटो और बंगाली. विभिन्न सांस्कृतिक समूहों ने एक अद्वितीय सांस्कृतिक सद्भाव का निर्माण किया है जो पश्चिम बंगाल के अन्य जिलों में बहुत कम देखने को मिलता है. हालांकि विभिन्न किस्मों की नस्लें और उनकी संस्कृतियां एक ही भूमि में आपस में मिल गईं, फिर भी प्रत्येक जाति ने अपनी व्यक्तिगत संस्कृति और विरासत को युगों तक बनाए रखा. इसने विभिन्न इंडो-मंगोल जनजातियों के आगमन को देखा था, जो इस उपजाऊ भूमि में बसने के लिए आए थे. उनमें से अधिकांश आज भी जीवित हैं. कुछ लिंबस और लेपचा भी मेची नदी को पार करके तराई के माध्यम से आए थे. फिर अंग्रेज आए, और उनके साथ वर्तमान बांग्लादेश के बंगाली आए. चाय बागान और कृषि भूमि के लिए कई वन क्षेत्र साफ हो गए. चाय बागानों में मजदूर के रूप में काम करने के लिए छोटानागपुर पठार क्षेत्र से नगेशिया, उरांव और मुंडा को बागान में लाया गया. ये सभी विभिन्न जनजातियाँ अपने साथ, अपनी संस्कृति और मान्यताओं को लेकर आईं.

जलपाईगुड़ी त्यौहार और मेला

अधिकांश जनजातीय संस्कृतियां लोक संस्कृतियों से संबंधित हैं. लोक नृत्य, लोक गीत और लोक कथाएं इन संस्कृतियों का अभिन्न अंग हैं. जलपाईगुड़ी की आबादी का बड़ा हिस्सा बंगालियों और राजबंगियों दोनों के लिए कई त्यौहार आम हैं. 'दुर्गा पूजा' और 'काली पूजा' जैसे प्रमुख त्योहारों के अलावा, इस क्षेत्र की जीवन रेखा तीस्ता नदी का प्रतीक 'तीस्ता बुरिर पूजा' भी है, एक ऐसा अवसर जो ज्यादातर बंगालियों और राजबंगियों द्वारा मनाया जाता है.

सर्प देवी की पूजा या 'मनोषा पूजा' इस क्षेत्र का एक अन्य महत्वपूर्ण त्योहार है. कई ग्राम मेले और स्टेज ड्रामा इस घटना को याद करते हैं. फिर 'अच्छी फसल' और 'अच्छी बारिश' के लिए अनुष्ठान होते हैं, जिसे बाद में 'हुत घुरनी' के नाम से जाना जाता है. जलपाईगुड़ी का अपना लोक रूप 'चोर चुन्नी' है.

जिले में साल भर असंख्य मेले, त्यौहार और सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जिनमें धर्म, समुदाय और संस्कृति का व्यापक मिश्रण होता है. मुख्य धर्मों के अनुयायी और कुछ आदिवासी समूह अपने स्वयं के धार्मिक त्यौहारों का पालन करते हैं, जबकि वे कुछ मेलों और समारोहों में शामिल होते हैं. जलपाईगुड़ी जिला कई मेलों का मेजबान है.

जलपेश मेला

जलपेश मेला प्रमुख मेलों में से एक है. यह फरवरी और मार्च के महीनों में शिवरात्रि के अवसर पर आयोजित किया जाता है. सदियों पुराना शिव मंदिर मेले का मुख्य आकर्षण है और मेला इस मंदिर के चारों ओर होता है. न केवल स्थानीय लोग बल्कि देश के विभिन्न हिस्सों से लोग इस मेले में भाग लेने आते हैं जो विभिन्न संस्कृतियों का मिलन स्थल है. इस अवसर पर दूर-दूर से तीर्थयात्री एकत्रित होते हैं. यह मेला जलपाईगुड़ी के सबसे बड़े मेले के रूप में प्रसिद्ध है जो आमतौर पर जलपेश्वर शिव के वार्षिक उत्सव के अवसर पर आयोजित किया जाता है जिसमें भूटान और सिक्किम के व्यापारी और दूर-दराज के जिलों के तीर्थयात्री एक साथ इकट्ठा होते हैं और भगवान शिव की अत्यंत भक्ति के साथ पूजा करते हैं.

करम महोत्सव

करम महोत्सव संथालों द्वारा आश्विन (सितंबर-अक्टूबर) के महीने में धन और संतान वृद्धि और बुरी आत्माओं से छुटकारा पाने के लिए मनाया जाता है. इस त्यौहार के दौरान दो युवक पवित्र होने के बाद जंगल से करम के पेड़ की दो शाखाएं लाते हैं और उन्हें घर के ठीक बाहर लगाते हैं. घर का मुखिया अन्य सामानों के साथ चावल-बीयर चढ़ाता है और घर की समृद्धि के लिए प्रार्थना करता है. इस पूजा के बाद गायन, नृत्य और वाद्य संगीत बजाया जाता है. वहां मौजूद सभी लोगों को चावल-बीयर पिलाई जाती है.

जलपाईगुड़ी का संगीत और नृत्य

लोक संगीत और लोक नृत्य जलपाईगुड़ी जिले की संस्कृति का अभिन्न अंग हैं. जलपाईगुड़ी का अपना लोक रूप चोर चुन्नी है. यह दोनों पौराणिक पात्रों के उत्थान और पतन के इर्द-गिर्द घूमती है. 'धाम गान' जलपाईगुड़ी का एक और लोकप्रिय लोकगीत है.

भवैया

यह राजबंशियों का लोकगीत है जो ईश्वर और मनुष्य दोनों के प्रेम को दर्शाता है. इस प्रकार का गीत कोचमैन द्वारा गाया जाता है. वे अपनी गाय की खींची हुई गाड़ी को चलाते समय यह गीत गाते हैं. भवैया के गायकों को बौड़िया के नाम से जाना जाता है. गाने दुख, दर्द, प्यार, अलगाव और यहां तक कि प्राकृतिक आपदाओं को भी दर्शाते हैं.

बिशा-हारा पाला

यह जलपाईगुड़ी का एक और बहुत लोकप्रिय मंच नाटक है. यह देवी मनसा - सर्प देवी और बेहुला - एक धर्मपरायण पत्नी की कहानी बताता है, जिसने अपनी शादी की रात सांप के काटने के कारण अपने पति - लखींदर को खो दिया था. इसमें मनुष्य और ईश्वर के बीच टकराव को दर्शाया गया है.

ढोल-सनाई

यह राजबंगियों की लोकप्रिय लोक संस्कृतियों में से एक है, राजबंशी कलाकारों द्वारा एक वाद्य प्रदर्शन, विवाह समारोह के लिए जरूरी है.

अत: पश्चिम बंगाल के उत्तरी भाग में हिमालय की तलहटी में स्थित जिले की उत्तर और दक्षिण में क्रमश: भूटान और बांग्लादेश के साथ अंतर्राष्ट्रीय सीमाएँ हैं और पूर्व, पश्चिम और उत्तर पश्चिम में असम और दार्जिलिंग पहाड़ियों के साथ सीमाएँ हैं. जिससे विभिन्न संस्कृतियों का एक मिश्रण देखा जाता है.यहाँ अनेकता में एकता कथन पूर्णरूप से चरितार्थ होती है. यहाँ के चाय बगान तथा घने जंगल और नदी के घास के मैदानों से आच्छादित, जलपाईगुड़ी वन्य जीवन के सबसे समृद्ध उपहारों में से एक है.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

लोक उत्सव

फसल कटाई के विभिन्न भारतीय त्योहार

- ज्ञानेश्वर पराते
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय जबलपुर

भारत में मकर संक्रांति, लोहड़ी, पोंगल, भोगली, बीहू, उत्तरायण और पौष पर्व आदि के रूप में विभिन्न फसल कटाई त्योहार मनाए जाते हैं.

मकर संक्रांति

- मकर संक्रांति एक हिन्दू त्योहार है जो सूर्य का आभार प्रकट करने के लिए समर्पित है. इस दिन लोग अपने प्रचुर संसाधनो और फसल की अच्छी उपज के लिए प्रकृति को धन्यवाद देते हैं. यह त्योहार सूर्य के मकर राशि में प्रवेश का प्रतीक है.
- यह दिन गर्मियों की शुरुआत और सूर्य के उत्तरायण होने का प्रतीक है. इस दिन से हिंदुओं के लिए छह महीने की शुभ अवधि की शुरुआत है.
- उत्तरायण के आधिकारिक उत्सव के एक हिस्से के रूप में गुजरात सरकार द्वारा वर्ष 1989 से अंतर्राष्ट्रीय पतंग महोत्सव का आयोजन किया जाता है.
- इस दिन के साथ जुड़े त्योहारों को देश के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है.

लोहड़ी

- लोहड़ी मुख्य रूप से सिखों और हिंदुओं द्वारा मनाया जाता है.
- यह दिन शीत ऋतु की समाप्ति का प्रतीक है और पारंपरिक रूप से उत्तरी गोलार्द्ध में सूर्य का स्वागत करने के लिए मनाया जाता है.
- यह मकर संक्रांति से एक रात पहले मनाया जाता है. इस अवसर पर प्रसाद वितरण और पूजा के दौरान अलाव के चारों ओर परिक्रमा की जाती है.
- इसे किसानों और फसलों का त्योहार कहा जाता है, इसके माध्यम से किसान ईश्वर को धन्यवाद देते हैं.

पोंगल

- पोंगल शब्द का अर्थ है ''उफान'' या विप्लव.
- इसे थाई पोंगल के रूप में भी जाना जाता है, यह चार दिवसीय उत्सव तमिल कैलेंडर के अनुसार ''थाई'' माह में मनाया जाता है, जब धान आदि फसलों की कटाई की जाती है और लोग ईश्वर तथा भूमि की दानशीलता के प्रति आभार प्रकट करते हैं.
- इस उत्सव के दौरान तमिल लोग चावल के आटे से अपने घरों के आंगे कोलम नामक पारंपरिक रंगोली बनाते हैं.

बीहू

- यह उत्सव असम में फसलों की कटाई के समय मनाया जाता है. असमिया नव वर्ष की शुरुआत को चिन्हित करने के लिए लोग रोंगाली/माघ बिहू मनाते हैं.
- पर्व उतना ही पुराना है जितना की ब्रम्हपुत्र नदी.

सबरीमाला में मकारविलक्कु उत्सव:

- यह सबरीमाला में भगवान अयप्पा के पवित्र उपवन में मनाया जाता है.
- यह वार्षिक उत्सव है तथा सात दिनों तक मनाया जाता है. इसकी शुरुआत मकर संक्रांति (जब सूर्य ग्रीष्म अयनांत में प्रवेश करता है) के दिन से होती है.
- त्योहार का मुख्य आकर्षण मकर ज्योति की उपस्थिती है, जो एक आकाशीय तारा है तथा मकर संक्रांति के दिन कांतामाला पहाड़ियों के ऊपर दिखाई देता है.
- इसका मुख्य उद्देश्य उन ग्रामीण क्षेत्रों में जहां भी आवश्यक हो अन्य एजेंसियों के साथ मिलकर खड़ी एवं ग्रामोद्योग की स्थापना तथा विकास के लिए योजनाए बनाना, उनका प्रचार-प्रसार करना तथा सुविधाएं एवं सहायता प्रदान करना है.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

लोक उत्सवों का महत्व

- निधि
सहायक प्रबन्धक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय (लुधियाना)

भारतवर्ष सबसे प्राचीन सभ्यता का देश माना जाता हैं, समय के साथ इसकी संस्कृति में काफी बदलाव आए चाहे वो मनुष्य के रहने सहने को लेकर हो, अपने व्यवसाय को लेकर हो। परन्तु शुरुआत से लेकर अब तक जो चीज समान रही वह हैं मनुष्यों का साथ में मिल- जुल कर रहना। इसी कारण मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहा गया हैं। आज भी मनुष्य समाज में रहना पसंद करता हैं। समाज में रहने के लिए एक परिवेश का निर्माण किया जाता हैं, मनुष्य के जीवन में चाहे खुशी हो, दु:ख हो या कोई अन्य समस्या, सब साथ मिलकर बाँटते है एवं इसी सिलसिले को जब लम्बे समय तक लोग मानते चले आए तो ''लोक उत्सवों'' का चलन शुरु हुआ। लोक उत्सव - जैसा कि नाम से ही स्पष्ट हो रहा हैं लोगो के द्वारा मनाया जाने वाला उत्सव। इसलिए कहा जा सकता है कि भारत देश लोक उत्सवों का देश हैं। हमारे यहाँ वर्ष भर लोक उत्सवों का सिलसिला चलता रहता हैं हर अलग ऋतु में, हर अलग राज्य में अलग अलग प्रकार के लोक उत्सव मनाए जाते हैं। कहा जाता है आधे से ज्यादा भारत गाँवों में बसता है एवं इस देश की आत्मा भी गाँवों में बसती हैं। फसल बोने से लेकर फ़सल काटने तक हर गतिविधि को यहाँ त्यौहार की तरह मनाया जाता है। लोक उत्सवों की एक और ख़ास बात है कि ये पारंपरिक एवं गैर पारंपरिक दोनों रूपों में हो सकते हैं। पारंपरिक वो जो सदा से चले आ रहें हैं, एवं गैर पारम्परिक वो जो किसी उद्देश्य के साथ शुरु किए गए हैं।

लोक उत्सवों का महत्व एवं विशेषताएँ -

1. ये छोटे छोटे उत्सव लोगो के बीच आपस में सहयोग की भावना और मिलनसार प्रकृति को बढ़ाते हैं।
2. अपनी संस्कृति को सहेज कर रखने में ये उत्सव अहम भूमिका निभाते हैं, क्योंकि इन उत्सवों की जड़ें हमारी सांस्कृतिक विरासत से जुडी हुई हैं।
3. लोक उत्सव हमेशा एक उद्देश्य से जुड़े हुए होते हैं, समय के साथ जब ये उत्सव मनाये जाते हैं तो इन उद्देश्यों का भी निर्वाह होता हैं एवं आने वाली नई पीढ़ी भी उस उद्देश्य से परिचित होतीं हैं।
4. इन उत्सवों के कारण मानव का प्रकृति के साथ एक अटूट रिश्ता स्थापित होता है, जैसे किसानों का अपनी फसलों के साथ, आदिवासियों का अपने जंगलों के साथ, पहाड़ों पर रहने वाले का वहाँ की नदियों, पेड़ों एवं पहाड़ो के साथ।
5. ये मनुष्य को खुश एवं जीवन को हर्षोल्लास से मनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

6. ये जीवन में एक सकारात्मकता का भाव पैदा करते हैं। समय समय पर आकर मनुष्यों को जीवन की नीरसता से उभारकर नई ऊर्जा का संचार करते हैं। जीवन में एक नवीनता लेकर आते हैं।

7. द्वेष, घृणा, नफरत जैसी नकारात्मक उर्जा को मनुष्य के मस्तिष्क से दूर रखते हैं एवं जीवन में आने वाली कठिनाइयों का डटकर सामना करके हँसते हुए किसी भी परिस्थिति से निपटने का साहस भी प्रदान करते हैं।

8. कुछ उत्सव गैर पारम्परिक प्रकृति के भी होते हैं जिन्हें सरकार के द्वारा किसी विशेष उद्देश्य के साथ चलाया जाता हैं, जैसे जागरूकता, संस्कृति संरक्षण, प्रकृति संरक्षण, किसी कुरीति का बहिष्कार, हमारी प्राचीन विरासत का संरक्षण एवं इसको बढ़ावा देना, ऊपरी तौर पर कहें तो हमारे जन मानस को उजले रूप से रूबरू कराना ।

9. ये उत्सव संगठन भावना एवं एकता को बढाते हैं, सुख हो या दु:ख आपस में बांटने की भावना यहाँ से जागृत होती हैं ।

लोक उत्सवों का पूर्ण रूप गांवों में देखने को मिला हैं, वहीं पर रहकर ही इनके असल रूप को जाना जा सकता हैं अगर राज्यों की दृष्टि से देखा जाए तो हर राज्य की लोक उत्सवों की अपनी एक अलग पहचान हैं। हर राज्य के अपने लोक नृत्य हैं जैसे तेरहताली - राजस्थान, पाइका-झारखण्ड, नटपूजा- असम, दकनी - असम इत्यादि अनेकों।

उत्सव लाते हैं उमंग और बहार,
महका देते हैं खुशियों से संसार
उत्सवों से आती है धूम और जीवन में झंकार
दूर हो जाता है अँधेरे का अंधकार
शुरु होता है उम्मीदों और आशाओं का नया सवेरा

लोक उत्सवों की अहमियत को सरकार ने भी बहुत ही बखूबी से समझा है, इसी की तर्ज पर सरकार द्वारा जागरूकता अभियानों को भी इन्ही उत्सवों के रूप में शुरु किया गया है, ताकि लोग एक दूसरे के साथ खुशियां मनाते हुए नए विषयों एवं साथ ही होने वाले परिवर्तनों के बारे में जागरूक हो सके। जैसे कि संस्कृति मेलों का आयोजन सरकार द्वारा हमारी संस्कृति के बचाव एवं नई पीढ़ी को इसके स्वरुप को समझने के लिया किया जा रहा है। सरकार द्वारा समय समय पर नई नई योजनाओं एवं जागरूकता अभियानों को भी उत्सवों का स्वरुप प्रदान किया जा रहा हैं ताकि जनमानस की भागीदारी ज्यादा से ज्यादा हो, उदहारणत: सरकार द्वारा ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'' अभियान को भी लोक उत्सव का रूप प्रदान किया गया। जिसका परिणाम आज हमारे समक्ष हैं हरियाणा जैसे राज्य जहां लिंग अनुपात में लड़कियां हमेशा पिछड़ी हुई रहती थी। परन्तु इस जन उत्सव के बाद न केवल लोगो में इसको लेकर जागरूकता आई, बल्कि लोगों ने इस तरफ कदम भी उठाने शुरु किए और आज इसके परिणाम काफी सुखद हैं।

हमें लोक उत्सवों की भूमिका केवल खुशियां मनाने तक नहीं समझनी चाहिए। लोक उत्सवों का स्वरुप काफी ज्यादा समृद्ध हैं, ये नई आशाओं और उम्मीदों के साथ नई जागरूकता की लहर लेकर आते हैं। आज के समय में बढती पाश्चात्य संस्कृति से बचाते हुए हमें अपनी लोक कला, संस्कृति को बढ़ावा देना चाहिए।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

लोक उत्सव की विविधता

- रिंकी साव
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर

भारत का इतिहास संस्कृति और परम्परा से समृद्ध रहा हैं, यहां समय समय पर भिन्न-भिन्न जातियों ने निवास किया. इन जातियों के संस्कृतियों एवं परंपराओं से भारत की भूमि समृद्ध होती रही हैं. जैसे-जैसे संस्कृतियों का विकास होता गया, ये संस्कृतियां लोकउत्सव के रुप में हमारे समक्ष आने लगे. लोक उत्सव वे उत्सव कहलाते हैं जो एक क्षेत्र विशेष द्वारा वहां के लोगों द्वारा लोक हित के लिए मनाये जाते हैं, भारत में साल के बारहों महिने ही उत्सव मनायें जाते हैं. चाहे उत्तर भारत हो या उत्तर-पूर्व या दक्षिण या मध्य भारत, यहां हर कोने में कोई न कोई उत्सव मनाये जाते है. इन उत्सवों की अपनी मान्यताएं भी होती हैं. हमारे भारत देश को अगर उत्सवों का देश कहा जाएं तो गलत नहीं होगा. क्योंकि अगर हम देखे तो सालों भर जितने उत्सव हमारे देश में मनाएं जाते हैं, शायद ही किसी देश में मनाएं जाते होंगे. इन उत्सवों का हमारे जीवन में खास महत्व होता हैं. ये हमारे जीवन में उमंग और उत्साह का संचार करते हैं, साथ ही ये हमारे जीवन में प्रसन्नता एवं परिवर्तन का अवसर भी लाते हैं।

तो चर्चा करते हैं भारत के कुछ विशेष लोक उत्सव के बारे में दरअसल मेरी कर्म भूमि भारत की उत्तर पूर्वी क्षेत्र है और जहां मैं कार्यरत हूं वहां की सबसे लोकप्रिय उत्सव बिहू है। यह वर्ष में तीन बार मनाई जाती है बिहू त्योहार का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व बेहद ही ज्यादा है। एक तरफ तो यह त्योहार तीन कृषि चक्रों को इंगित करता है तो दूसरी तरफ बिहू के माध्यम से फसल कटाई और प्रकृति संरक्षण विषयों पर जानकारी मिलती है. रोंगाली बिहू के समय दानधर्म के मार्ग पे आगे बढ़ने की परंपरा हैं, वही भोगाली बिहू के सांस्कृतिक महत्व के रूप में प्रकृति की सच्चाई को जानना और उसके अनुसार अपने जीवन में आमूलचूल आध्यात्मिक परिवर्तन करना तथा अग्नि को साक्षी मानकर अपने बुरे विचारों को त्याग कर अच्छे मार्ग को अपनाना मुख्य है। कौंगाली बिहू के भी सांस्कृतिक और धार्मिक दोनों तरह के महत्व है इसके सांस्कृतिक महत्व के रूप में अपने प्रति कठोरता और दूसरों के प्रति उदारता का संदेश है साथ ही जो भी गलतियां भूतकाल में हुई हो उन्हें प्रायश्चित के माध्यम से दूर करने का ज्ञान इस पर्व से मिलता है इसीलिए कौंगाली बिहू के दिन कोई उत्साह नहीं मनाया जाता है बल्कि कई अन्य अनुष्ठानों द्वारा प्रकृति और अपनी रक्षा के लिए कामना की जाती है ।

पूर्वी भारत में पश्चिम बंगाल मेरी जन्मभूमि कोलकत्ता जहां के दुर्गापूजा पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं, यहां दुर्गा पूजा में मां दुर्गा के आगमन से लेकर विजयदशमी के सिंदूर खेला तक लोंगो के मन में एक अलग ही उत्साह रखता है. इसके अलावा यहां भाईफोटा, नोबो वर्षो, जगधात्री पूजा, डोल पूर्णिमा जैसे अनेक उत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाये जाते हैं.

उत्तर भारत का सबसे लोकप्रिय उत्सव छठ पूजा है। देश का ऐसा लोक उत्सव जिसमें उगते सूर्य की तो पूजा की जाती हैं साथ ही डूबते सूर्य की भी पूजा की जाती हैं। मान्यताओं के अनुसार इस दिन भगवान सूर्य और उनकी पुत्री की पूजा की जाती है। यह त्योहार चार दिनों का होता है, नहाए खाए, खरना, पहला अर्घ्य और दूसरा अर्घ्य। इस त्यौहार का जो मुख्य प्रसाद है उसको ठेकुआ कहा जाता है जिसको बनाने में आटा, मैदा, घी, चीनी या गुड का प्रयोग किया जाता है। मान्यताओं के अनुसार यह पूजा पुत्र की कामना के लिए की जाती है। देश का ऐसा लोक उत्सव जिसमें उगते सूर्य की तो पूजा की जाती हैं साथ ही डूबते सूर्य की भी पूजा की जाती हैं।

दूसरी तरफ अगर दक्षिण भारत का रुख करें तो वहां का जो सबसे प्रसिद्ध लोक उत्सव है वह है पोंगल, यह त्यौहार प्रति वर्ष 14-15 जनवरी को मनाया जाता है यह फसल की कटाई का उत्सव है पोंगल का तमिल में अर्थ उफान या विप्लव होता है पारंपरिक रूप से यह संपन्नता को समर्पित उत्सव है जिसमें समृद्धि लाने के लिए वर्षा धूप तथा खेतिहर मवेशियों की आराधना की जाती है।

भारत के पूर्वी क्षेत्र का लोकप्रिय उत्सव गुड़ी पर्व है, मान्यता के अनुसार गुड़ी पड़वा के दिन ही जगतपिता ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना का कार्य आरंभ किया था और सतयुग की शुरुआत इसी दिन से

हुई थी। यही कारण है कि इसे सृष्टि का प्रथम दिन या युगादि तिथि भी कहते हैं। इस दिन नवरात्रि घटस्थापन, ध्वजारोहण, संवत्सर का पूजन इत्यादि किया जाता है।

अब बात करतें हैं मध्य भारत की जहाँ की सबसे लोकप्रिय उत्सव खुजराहो उत्सव है, जो कथक, भरतनाट्यम, ओडिसी, कुचिपुड़ी, मणिपुरी और कथकली जैसे कई कला रूपों के प्रदर्शन के लिए प्रसिद्ध है। सात दिन तक चलने वाले खुजराहो उत्सव का आयोजन चित्रगुप्त और विश्वनाथ मंदिर के ठीक सामने एक खुले मैदान में होता है। भारत के प्रमुख नृत्य रूपों की अभिव्यक्ति देखी जाती है। त्यौहार के दौरान मंदिर एक तारे की तरह चमकता है जो पर्यटकों के लिए अन्य आकर्षण केंद्र बना हुआ है। भारतीय पौराणिक कथाओं के अनुसार, देवी और देवता संगीत, नृत्य, गायन और वाद्य संगीत के महान प्रेमी थे। हर साल इस विशाल मंदिर के रचनाकारों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए इस उत्सव का धूमधाम से आयोजन किया जाता हैं.

जैसा कि हाल ही में कन्नड़ सिनेमा में आई ''कांतारा'' फिल्म में कर्नाटक के क्षेत्र प्रमुख जहां जंगल के देवता को कांतारा कहा जाता है और उन्हीं देवता एवं उससे जुड़ी लोक मान्यता को इस फिल्म में बहुत ही सुंदर तरीके से दिखाया गया है कि कैसे लोक उत्सव एवं परंपरा के प्रति लोगो के मन में सम्मान होता हैं वे उनके प्रति समर्पित होते हैं, और ये सम्मान एवं समर्पण होना भी चाहिये. लोक उत्सव ही होते हैं जो हमारी आधारभूत पहचान होते हैं,हम कहां से आये है, हमारी संस्कृति क्या हैं, हमारी परंपरा क्या हैं, ये सारी बातें लोक उत्सव के माध्यम से ही हमें पता चलती हैं.

हंसी के पल

टीचर- इतने दिन कहां थे, स्कूल क्यों नहीं आए?
गोलू- बर्ड फ्लू हो गया था मैम।
टीचर- पर ये तो पक्षियों को होता है इंसानों को नहीं।
गोलू- इंसान समझा ही कहां आपने...रोज तो मुर्गा बना देती हो..!!

दो लड़कियां बस में सीट के लिए लड़ रही थीं
कंडक्टर- अरे क्यों लड़ रही हो,
जो उम्र में सबसे बड़ी है वो बैठ जाए
फिर क्या, पूरे रास्ते दोनों खड़ी ही रहीं

महिला- डॉक्टर साहब, मेरे पति नींद में
बातें करने लगे हैं! क्या करूँ?
डॉक्टर- उन्हें दिन में बोलने का
मौका दीजिए!

बेटा बाप से- पापा से साढ़ू का रिश्ता क्या होता है
बाप- बेटा जब दो आदमी एक ही कंपनी से ठगे जाते हैं तो साढ़ू कहलाते हैं...
तभी वहां मम्मी आ गई
बस फिर क्या है तब से मम्मी गुस्से से 'लाल' हैं....और पापा डर के मारे 'पीले'

आज़ादी का अमृत महोत्सव

वसूली प्रबंधन

- प्रकाश कुमार बर्णवाल
सहायक प्रबंधक,
भुबनेश्वर

वसूली सुनने में छोटा सा शब्द लगता है परंतु बैंकों में भारतीय अर्थव्यवस्था में इसका अहम योगदान हैं एवं व्यापक रूप से इसे देखा जा सकता है। वर्तमान समय में अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में बैंकों का बहुत बड़ा योगदान है। आज के समय में एक ओर जब बैंकों का विस्तार हो रहा हैं इसके व्यवसाय में बढ़ोत्तरी हो रही हैं इसके साथ-साथ बैंकों का गैर निष्पादित संपत्ति का लेवल भी बढ़ता जा रहा है जो की बैंकों के लिए एक ख़तरे की घंटी की ओर इशारा करता हैं। एक ओर सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम बैंकों का गैर निष्पादित सम्पति 2009-10 में जहाँ 25.19 लाख करोड़ था वही यह बढ़कर 2018-19 में 63.82 लाख करोड़ हो गया हैं जो कि बैंकों के लिए चिंता का विषय है। यह न सिर्फ बैंकों में जनता के रुपये को अवरुद्ध करता है बल्कि अर्थव्यवस्था में भी एक जोरदार असर डालती हैं । इसी फँसे हुये रुपए को वापस अर्थव्यवस्था में लाने के लिए बैंक जोरदार प्रयास करती रहती है। ताकि जनता का पैसा ना डूबे और बाजार में प्रयोग होता रहे। इस डूबे हुये पैसे को किस-किस रूप में हम वापस ला सकते हैं यह भी विचार किया जाता है एवं विभिन्न प्रकार की योजना एवं प्रक्रिया अपनाई जाती हैं । चूंकि एक बार जब कोई ऋण खराब हो जाता है (NPA) तब उस पर ब्याज लगना बंद हो जाता हैं एवं उस पर हमें विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा अपने लाभ में से कुछ हिस्सा अलग (provision) करके रखना पड़ता है जिससे बैंकों की आय में कमी होती है एवं उसका जो वास्तव में एक सम्पति के रूप में रहता हैं वह बैंकों पर एक बोझ के रुप में रहता हैं। इन्ही खातों को बैंक अपने बोर्ड के अनुमोदन से ऋणों की वसूली तथा उसे बट्टे खाते में डालने, समझौता करने एवं निपटान पर वार्तालाप करने के लिए अपने नीतियों को बनाने एवं उसे कार्यान्वित करने के लिए स्वायत्त हैं । 2016 के दिवाला एवं दिवालियापन संहिता (IBC) सफल कार्यान्वयन के पश्चात 1 लाख रुपये तक के छोटे ऋण की नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल के समक्ष लाये जा सकते हैं । इन सबके अलावा निम्न प्रकार से भी वसूली की जा सकती है-

1. **बैंकों के बोर्ड द्वारा प्रस्तावित ओटीएस (OTS)-** यह एक नीति है जिसके अंतर्गत बैंक अपने पूर्व राशि में कुछ राशि छूट के रूप में देकर एक निश्चित समय में रुपए देने का ऑफर अपने ग्राहकों को देती है। यह ऑफर ऋण राशि एवं ऋण के समक्ष उपलब्ध प्रतिभूति के मूल्य के अनुसार बैंक के बोर्ड द्वारा बनाए गए नीतियों के अनुरूप किया जाता है जिसमें एक तय समय पर समझौते की राशि के रूप में लौटाया जा सकता है।
2. **लोक अदालते-** लोक अदालतों का गठन 20 लाख रुपये तक के छोटे गैर निष्पादित सम्पति से निपटने के लिए किया जाता है। लोक अदालते आम तौर पर ऋणचूककर्ताओं पर बहुत कठोर नहीं होती हैं और ऋण से संबंधित विवादों का बैंक और ऋण चूकर्ताओं में एक समन्वय बैठाकर समझौता करवाती हैं। इसमें भी एक निश्चित समय पर तय राशि या समझौता राशि को लौटाया जाता है।
3. **नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल और नेशनल कंपनी लॉ अपीलेट ट्रिब्यूनल-** यह एक ऐसा निकाय हैं जिसका दिवाला एवं दिवालियापन संहिता (IBC) तहत औद्योगिक एवं वित्तीय पुनर्निमाण के लिए अपीलीय प्राधिकरण का नाम बदल दिया गया हैं। दिवाला एवं दिवालियापन के तहत न केवल वित्तीय लेनदार बल्कि परिचालन लेनदार भी नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल के समक्ष परिसमापन के उद्देश्य के लिए आवेदन दाखिल कर सकते है। दिवाला एवं दिवालियापन संहिता की पूरी प्रक्रिया को भी बहुत अच्छी तरह से निर्धारित करता है, जिसमें मुकदमेबाजी भी शामिल है जिसे 330 दिनों के भीतर पूरा किया जाता है।
4. **अन्य दूसरे बैंकों या वित्तीय संस्थान को गैर निष्पादित सम्पति बेचना-** एक बैंक के लिए अपने गैर-निष्पादित सम्पति की किसी अन्य बैंक या वित्तीय संस्थान को बेचने का प्रावधान है, अगर यह दो साल से अधिक समय तक बेचने वाले बैंक की खाताबही में रहा हो। साथ ही बैंक द्वारा किसी अन्य बैंक का गैर निष्पादित सम्पति बेचने से पहले कम से कम 15 महीने तक गैर निष्पादित सम्पति रखना अनिवार्य है। हालांकि एक नियम है कि गैर निष्पादित सम्पति को उसी बैंक को वापस नहीं बेचा जा सकता है जिसने मूल रुप से गैर निष्पादित सम्पति को बेचा था।

बैंकों द्वारा प्रस्तावित ऋण वसूली प्रबंधन को प्रभावित करने वाले कारक:-

1. बैंक में उपलब्ध दस्तावेज
2. सिक्यूरिटी का मूल्य एवं बिक्री मूल्य
3. बेचने की प्रक्रिया
4. ऋणकर्ता की क्षमता
5. गारंटर/ऋणकर्ता वैधता
6. समय सीमा
7. बैंक की नीति

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सांस्कृतिक विरासत

- प्रतिभा मिश्रा
एसडबल्यूओ-क्षेत्रीय कार्यालय,
जबलपुर

संस्कृति किसी भी देश , जाति और समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति से ही देश, जाति समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे वह अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों, आदि का निर्धारण करता है, अत: संस्कृति का साधारण अर्थ होता है - संस्कार, सुधार, परिष्कार, शुद्धि, सजावट आदि। संस्कृति का क्षेत्र सभ्यता से कहीं अधिक व्यापक और गहन होता है। सभ्यता का अनुकरण किया जा सकता है लेकिन संस्कृति का अनुकरण नहीं किया जा सकता है। सभ्यता वह है जो हम बनाते हैं तथा संस्कृति वह है जो हम हैं।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। यह माना जाता है कि भारतीय संस्कृति यूनान, रोम, मिश्र, सुमेर, और चीन की संस्कृतियों के समान ही प्राचीन है। कई भारतीय विद्वान तो भारतीय संस्कृति को विश्व की सर्वाधिक प्राचीन संस्कृति मानते हैं।

भारतीय संस्कृति का सर्वाधिक व्यवस्थित रूप हमें सर्वप्रथम वैदिक युग में दिखाई देता है। वेद विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ माने जाते हैं। प्रारंभ से ही भारतीय संस्कृति अत्यंत उदात्त, समन्वयवादी, सशक्त एवं जीवंत रही है, जिसमें जीवन के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा आध्यात्मिक प्रवृत्ति का अद्भुत समन्वय पाया जाता है। भारतीय विचारक आदिकाल से ही संपूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में मानते रहे हैं, इसका कारण उनका उदार दृष्टिकोण है।

हमारे विचारकों कि 'उदारचरीतानं तू वसुधैव कुटुम्बकम' के सिद्धान्त में गहरी आस्था रही है। वस्तुत: शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों का विकास ही संस्कृति की कसौटी है। इस कसौटी पर भारतीय संस्कृति पूर्ण रूप से उतरती है। प्राचीन भारत में शारीरिक विकास के लिए व्यायाम, यम, नियम, प्राणायाम, आसन ब्रम्हचर्या आदि के द्वारा शरीर को पुष्ट किया जाता था। लोग दीर्घजीवी होते थे।

आश्रम व्यवस्था का पालन करते हुये धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र रहा है।

प्राचीन भारत के धर्म, दर्शन, शास्त्र, विद्या, कला, साहित्य, राजनीति, समाजशास्त्र इत्यादि में भारतीय संस्कृति के सच्चे स्वरूप को देखा जा सकता है।

यह संस्कृति ऐसे सिद्धांतों पर आश्रित है जो प्राचीन होते हुये भी नए हैं, ये सिद्धान्त किसी देश या जाति के लिए नहीं अपितु समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए हैं। इस दृष्टि से भारतीय संस्कृति को सच्चे अर्थ में मानव संस्कृति कहा जा सकता है। मानवता के सिद्धांतों पर स्थित होने के कारण ही तमाम आघातों के बावजूद भी यह संस्कृति अपने अस्तित्व को सुरक्षित रख सकी है।

भारतीय संस्कृति का वर्तमान स्वरूप और महत्व:

भारतीय संस्कृति का नूतन आयाम ब्रिटिश साम्राज्य की नींव के साथ प्रारंभ हुआ। इस काल में सभ्यता ने संस्कृति को दबाने की चेष्टा की अत: संस्कृति का यथार्थ स्वरूप उभर नहीं सका। इस काल में सामाजिक आचार-विचार पर पश्चिम संस्कृति का प्रभाव पड़ा। संयुक्त कुटुंब प्रथा के स्थान पर परिवारों का पृथकरण होने लगा। धर्मनिरपेक्षता के सिद्धान्त ने धर्म को पीछे धकेल दिया। विज्ञान ने ज्ञान के अपेक्षित स्वरूप की अपेक्षा कर दी, भौतिकतावाद उभरकर सामने आया और भारतीयों का सांस्कृतिक दृष्टिकोण अपने मूल लक्ष्य से भटक गया।

आधुनिकतावाद की अवधारणा का समाज में आना आसान हो गया। वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण के मध्य में गहरा संबंध है। जब भारतीय संस्कृति का स्वरूप आधुनिक हो गया तब निश्चित दिशा में होने वाले परिवर्तन भी दिखाई देने लगें।

बुद्धिवाद, विवेकीकरण और उपयोगितावाद आदि दर्शन का उदय संस्कृति का नया स्वरूप बन गया जिसमें प्रगति की आकांक्षा, विकास की आशा और परिवर्तन के अनुरूप अपने आपको ढालने का गुण होता है।

आधुनिकता की जड़ें यूरोपियन पुनर्जागरण से जुड़ी है। यूरोपीय पुनर्जागरण में नए-नए अन्वेषण और आविष्कार हुये, धर्म और दर्शन का नया संस्करण सामने आया।

कला और विज्ञान की नवीन साधना का श्रीगणेश हुआ, राजनीतिक तथा समाज व्यवस्था में मौलिक क्रांति का सूत्रपात हुआ। इसके

परिणामस्वरूप पश्चिम यूरोप एवं एशिया (भारत) में एक नवीन चेतना का संचार हुआ।

प्रौद्योगिकी विकास, विकेन्द्रीकरण एवं वैश्वीकरण आदि द्वारा सभी क्षेत्रों में बुनियादी परिवर्तन हुये जिसके परिणामस्वरूप समाज की एक विशिष्ट स्थिति को प्रदर्शित करने वाली अवधारणा बनी है।

महिला को उचित स्थान मिला। अर्थात बदली हुई संस्कृति में महिलाओं के प्रति सोच बदली अब उसे सशक्तिकरण की ओर ले जाने के प्रयास किए जाने लगे। कई आंदोलन व चर्चाओं का सहारा लिया गया। इस प्रकार सांस्कृतिक, मानवतावादी व व्यक्तिवादी स्वरूप देखने को मिला।

मानवता के विकासशील एवं सृजनात्मक स्वभाव पर बल देते हुये धर्म एवं तर्क, विज्ञान एवं धर्म का ही नहीं, वरन प्राच्य एवं पाश्चात्य विचारधाराओं के समन्वय का भी प्रयास किया गया है।

संस्कृति के नए स्वरूप में गांवों की संस्कृति को छोड़कर शहरीकरण देखा गया। इस पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा। शहरीकरण से पलायन भी देखा गया। इस प्रकार लोग पुरानी संस्कृति को छोड़कर आधुनिक संस्कृति को अपनाने लगे।

निष्कर्षत: भारत में कभी भी एक ही संस्कृति पूर्ण रूप से व्याप्त नहीं रही और ना ही शायद किसी भी बड़े प्रदेश में कभी एक ही संस्कृति रही है। इस देश में आध्यात्मिक संस्कृति की प्रमुखता रही है। अत: संस्कृति में बदलाव निरंतर होता रहेगा।

हिंदी भाषा से जुड़े कुछ रोचक तथ्य:

- ''हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय-हृदय से बातचीत करता है और हिन्दी हृदय की भाषा है'' - महात्मा गांधी
- वास्तव में 'हिंदी' संस्कृत के विभेदीकरण के कारण लगभग 1000 ईस्वी पूर्व अस्तित्व में आई है. हिन्दी का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है.
- ''नमस्ते'' शब्द हिंदी में सबसे ज्यादा प्रयोग किये जाने वाले शब्दों में है.
- भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली एकमात्र भाषा 'हिंदी' है जिसे देश के 77% लोग बोल और समझ सकते हैं.
- अमेरिका के 45 और दुनिया के करीब 175 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है. हिंदी और दूसरी अन्य भारतीय भाषाओं पर पहला विस्तृत सर्वेक्षण एक अंग्रेज सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने किया था।
- हिन्दी को आधिकारिक भाषा का दर्जा देने वाला पहला राज्य बिहार था. 1881 में बिहार ने उर्दू को हटाकर हिंदी को अपनी आधिकारिक भाषा घोषित किया था.
- 1805 में प्रकाशित हुई 'प्रेम सागर' को हिंदी की पहली प्रकाशित पुस्तक माना जाता है. इसे लल्लू लाल जी ने लिखा था.
- हिंदी भाषा पर पहला शोध कार्य 'द थिओलॉजी ऑफ तुलसीदास'को लंदन विश्वविद्यालय में पहली बार एक अंग्रेज विद्वान जेआर कारपेंटर ने प्रस्तुत किया था।
- 14 सितंबर 1949 को गांधी जी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन में हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने को कहा था.
- संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिन्दी में पहली बार 1977 में संबोधित किया गया था. तत्कालीन विदेश मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने हिंदी में भाषण दिया था.
- दुनिया में भी मंदारिन, स्पेनिश और अंग्रेजी के बाद हिंदी चौथी सबसे ज्यादा बोले जाने वाली भाषा है.
- अंग्रेजी रोमन लिपि में कुल 26 वर्ण हैं, वहीं देवनागरी लिपि की हिंदी वर्णमाला में वर्णों की संख्या उससे दुगुनी यानी 52 है.
- भारत के बाहर नेपाल, फिजी, मॉरीशस, पाकिस्तान, न्यूजीलैंड, संयुक्त अरब अमीरात, युगांडा, अमेरिका, यूके, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद, टोबैगो और जर्मनी में हिंदी बोली जाती है.
- गुरु, कर्म, मंत्र, निर्वाण, योग, अवतार, जंगल, खाकी, बंगला, पंच, पजामा, लूट, शैंपू, शरबत, आंधी और ठग जैसे कई शब्द अंग्रेजी ने हिंदी से उधार लिए हैं. ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में 'अच्छा' और 'सूर्य नमस्कार' जैसे हिंदी के शब्द शामिल हैं.
- साल 2022 के जून महीने में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने पहली बार हिंदी भाषा से जुड़े भारत के प्रस्ताव को मंजूरी दी है. इस प्रस्ताव में कहा गया है कि संयुक्त राष्ट्र के सभी जरूरी कामकाज और सूचनाओं को इसकी आधिकारिक भाषाओं के अलावा दूसरी सहायक भाषाओं जैसे- हिंदी में भी जारी किया जाए.

रंग दर्पण

खड़े हो जाइए दर्पण के सामने
आपकी आँखों पर चढ़ा परदा उतर जायेगा.
बात करते हैं सुन्दर चश्मे की
जो एक बार एकसमान
किसी का भी कभी न रह पायेगा.
हे मानव घमंड किस पर करते हो
उस बात की, जिसको बनाने में
तेरा कोई योगदान नहीं.
या उस रंग की, जिसे
कहीं तू किसी से बता न पायेगा.
सब रंगों से मिलकर ही बढ़ती है सुन्दरता चित्र की
अकेला उजला रंग कहाँ शोभा बढ़ा पाता है चित्र की.
हे मानव,
तू सुन्दरता की परिभाषा कभी समझ है क्या पाया
सुन्दरता तो है अपने मन से.
गुण से सुन्दर,
चरित्र से सुन्दर,
हो तो शोभामान कहलाये
रूप-रंग हो गोरा या हो काला
क्या इन्सान अपनी बनावट से अपनी कोई पहचान बना पाया
अगर बनाना है मुकाम तो बढ़ा ले अपना ज्ञान
जिसपे कर सके तू गर्व
और आ सके किसी के काम
गुत्थी सुलझी हुई है
सब खेल है बस रंग रूप का
जिसमें बिछ गए हैं हम ही शतरंज की तरह
भगवान ने तो बस बनाया है मानव को
धर्म और जाति बनाकर बंटवाया है मानव ने खुद को

- चन्द्रप्रभा झा
धर्मपत्नी: अरविन्द कुमार झा
मुख्य प्रबंधक,
क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

आज़ादी का अमृत महोत्सव

लोकोत्सव - एक सांस्कृतिक धरोहर

- मनोज कुमार साहू
क्षेत्रीय कार्यालय
बांकुड़ा

लोकोत्सव एक ऐसा उत्सव है जिसे सभी धर्म, जाति और विचारधारा के लोग मिलकर मनाते हैं. उत्सव मानव जीवन का एक बड़ा हिस्सा है क्योंकि वो बहुत सारी खुशियाँ लेकर आता है और हमारे जीवन को खुशियों से भर देता है. उत्सव मानव जीवन में व्याप्त नीरसता को तोड़ते हैं. हर देश में अपनी संस्कृति और धर्म से संबंधित कुछ त्योहार होते हैं. हालाँकि,भारत एक ऐसा देश है जहाँ विविध संस्कृति है, यहाँ सभी धर्मों के लोग आपसी सद्भाव और भाईचारे के साथ रहते हैं और सभी प्रकार के उत्सव को बड़े धूम-धाम के साथ मनाते हैं. विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं का आधार ही लोकोत्सव है, लोकोत्सव के माध्यम से लोगों में आपसी सद्भाव की भावना विकसित होती है, लोगों को एक-दूसरे के साथ जुड़ने का अवसर मिलता है और आपसी एकता को बल मिलता है इसलिए सांस्कृतिक विरासत हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है. कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमने कितनी प्रगति की है और हम कितनी दूर तक पहुँचने की योजना बना रहें हैं, हम अपनी संस्कृति और परंपराओं को कभी नहीं भूल सकते क्योंकि वे हम में अंतर्निहित हैं और हमारे लिए एक अविभाज्य हिस्सा हैं. भारत विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं का देश है. हमारे देश में कई जातियों, धर्मों और पंथों के लोग रहते हैं. इनमें से प्रत्येक जाति और धर्म के अपने रीति-रिवाज और परंपराएं हैं. प्रत्येक धार्मिक समूह द्वारा पालन की जाने वाली संस्कृति में गहरी अंतर्निहित जड़े हैं और इसका अटूट विश्वास है. हमारी संस्कृति की सुंदरता यह है कि हम न केवल अपनी विरासत के प्रति सम्मान रखते हैं बल्कि अन्य धर्मों के लिए भी सम्मान दिखाते हैं. यही कारण है कि सदियों से ज्वलंत भारतीय विरासत बची हुई है. प्रत्येक जातीय समूह की अपनी मूल कहानी और अनूठी परंपराओं और संस्कृति का अपना समूह है.

भारतीय रीति-रिवाज और परंपराएँ हमे विनम्र बने रहने, दूसरों का सम्मान करने और समाज में सद्भाव से रहने के लिए प्रोत्साहित करती हैं. अलग परिवारों, जातियों, उप-जातियों और धार्मिक समुदाय में जन्म लेने वाले लोग एकसाथ शांतिपूर्वक एक समूह में रहते हैं. यहाँ लोगों का सामाजिक जुड़ाव लंबे समय तक रहता है. अपनी तारतम्यता, और सम्मान की भावना, इज़्ज़त और एक-दूसरे के अधिकार के बारे में अच्छी भावना रखते हैं. अपनी संस्कृति के लिये भारतीय लोग अत्यधिक समर्पित रहते हैं और सामाजिक संबंधों को बनाए रखने के लिये अच्छे सभ्याचार को जानते हैं.

लोक उत्सव को पश्चिम बंगाल के उत्सव के माध्यम से देख सकते हैं.

1. **दुर्गा पूजा :-** शरद ऋतु में मनाई जाने वाली दुर्गा पूजा बंगाल के त्योहारों के कैलेण्डर का सबसे महत्त्वपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक और धार्मिक उत्सव है. दुर्गा पूजा न केवल पश्चिम बंगाल परंतु बिहार (बिहारियों), ओडिशा (उडीयाँ) और असम (अहोमियों) और भारत के अन्य राज्यों में जहाँ बंगाली समुदाय रहता है वहाँ भी मनाई जाती है. यह त्यौहार देवी दुर्गा से आशीर्वाद पाने के लिए उन्हें पूजने और महिषासुर राक्षस पर उनकी विजय को मनाने के लिए मनाया जाता है. यह भी माना जाता है कि भगवान राम ने रावण से युद्ध करने से पहले देवी दुर्गा का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उनकी पूजा की थी. दुर्गा पूजा, अधिकतर अक्टूबर में पड़ने वाला, दस दिनों का त्यौहार होता है, जो महालय अथवा त्यौहार के पहले दिन से आरंभ होता है. महालय अगोमोनी या आगमन गीत गाकर मनाया जाता है. उत्सव पाँच दिन बाद आरंभ होते हैं और षष्टि, सप्तमी, अष्टमी और नवमी के पर्व मनाए जाते हैं. उत्सव के प्रत्येक दिन एक विस्तृत सामूहिक भोग या देवी के लिए अन्न का भोग बनाया जाता है और यह जन समूहों द्वारा ग्रहण किया जाता है.

   दसवें दिन अथवा विजय दशमी को देवी को डाक नामक पारंपरिक ढोल की धुन पर पास की नदी या जलाशयों में विसर्जन के लिए ले जाया जाता है. पूजा मंडप या मुख्य पूजा स्थली पंडाल नामक अस्थायी बाँस की संरचना के अंदर बना एक चबूतरा होता है. नामित पुजारियों द्वारा मंडप के अंदर देवी देवताओं के सामने अनुष्ठान किए जाते हैं. फल, फूल, मिठाई धूप और चंदन की लकड़ी के चढ़ावे को देवी देवताओं के सामने थालों में रख दिया जाता है और पंडाल में एकत्रित लोग पूजा करने वाले पुजारी के पीछे-पीछे मंत्रों को दोहराते हैं. अस्थायी पंडाल और देवी की प्रतिमा को सूक्ष्म कलाकृति

और शैलीगत विषयों से सजाया जाता है जो शोला या पीठ रंगीन जूट बुनी हुई जरी, जेवर, चिकनी मिट्टी और टेराकोटा के आभूषण जैसी स्थानीय शिल्प सामग्री से बने होते हैं.

2. **चरक पूजा:-** एक और अनूठा लोक पर्व चरक पूजा पश्चिम बंगाल ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासी लोगों द्वारा हर साल अप्रैल (पोइला बैसाख) में मनाया जाता है. इस त्योहार के दौरान, लोग कॉस्मेटिक शिव, पार्वती, कृष्ण और अन्य देवताओं की तरह तैयार होते हैं. चरक के पेड़ की पूजा की जाती है और भक्तों द्वारा कई तपस्याएं की जाती हैं. महीने भर के उपवास के बाद, भक्त बांस के ऊंचे मंच पर चढ़ने के लिए इकट्ठा होते हैं, जो 10-15 फीट लंबा होता है. वे इन बांस के खंभों पर आगे की ओर उछलते हैं और जमीन पर गिर जाते हैं. और जो असाधारण है वह यह है कि तपस्या करने वाले लोग कांच, कांटों, चाकूओं और अन्य कुटिल हथियारों पर गिरने के बावजूद बाल-बाल बच जाते हैं. ऐसा माना जाता है कि भगवान का आशीर्वाद उन्हें उस दर्द से सुरक्षित रखता है जो वे अपनी भक्ति प्रदर्शित करने के लिए खुद पर लाते हैं.

इस तरह वे बिना दर्द महसूस किए अपने शरीर के अंगों को सूली पर चढ़ा देते हैं. त्योहार न केवल अंध विश्वास को दर्शाता है बल्कि मोक्ष प्राप्त करने के लिए तपस्या स्वीकार करने की उत्सुकता को भी दर्शाता है.

3. **पोइला बैशाख:-** अधिक बोलचाल की भाषा में पोहेला के रूप में जाना जाता है, पोइला बैसाख पारंपरिक नव वर्ष दिवस है जो हर साल 14 अप्रैल को पश्चिम बंगाल में मनाया जाता है. यह त्योहार जुलूसों, मेलों, पारिवारिक समय और पारंपरिक बोंग भोजन के साथ मनाया जाता है. नाबो बरशो के रूप में भी जाना जाता है, जिसका अर्थ है नया साल, इसे राजकीय अवकाश के रूप में मनाया जाता है और पश्चिम बंगाल के लोग नदियों में डुबकी लगाकर और लक्ष्मी और गणेश की पूजा करके इस दिन को चिह्नित करते हैं.

रंगोली से घरों की सफाई और सजावट के अलावा, पश्चिम बंगाल में लोग उगते सूरज को अर्घ्य देने के लिए इकट्ठा होते हैं क्योंकि इसे शुभ माना जाता है. बंगला संगीत मेला सरकार द्वारा आयोजित किया जाता है, मेले में कई पेशेवर और शौकिया गायक, नर्तक और थिएटर कलाकार भाग लेते हैं. पोइला बैसाख को नौतून जामा से भी जोड़ा जाता है जिसका अर्थ है एक नई पोशाक. साल के पहले दिन नए कपड़े पहनना शुभ माना जाता है और इसलिए पश्चिम बंगाल के लोग इस परंपरा का धार्मिक और शालीनता से पालन करते हैं. पश्चिम बंगाल में व्यापारियों और व्यवसायियों के लिए, इस दिन को हालखाता समय माना जाता है - नए खाते खोलने का शुभ दिन.

खाने के शौकीनों की भूमि में कोई उत्सव बिना भव्य प्रसाद के नहीं होता है. बहुत से लोग अपनी खुद की रसोई में बोंग विशेषता पकाते हैं, जबकि रेस्तरां अपने मेहमानों को खुश करने के लिए मुंह में पानी लाने वाले स्प्रेड के साथ हैं. सभी उत्सवों के बीच, बंगाली नई शुरुआत और नई आशा की भावना के साथ जीना सुनिश्चित करते हैं.

4. **जगन्नाथ रथ रात्रा:-** जगन्नाथ रथ यात्रा कोलकाता शहर का सबसे लोकप्रिय त्योहार है. 1396 से पश्चिम बंगाल में जगन्नाथ रथ यात्रा का पालन किया जाता है. औपचारिक रथ यात्रा के साथ एक सप्ताह का उत्सव कोलकाता, नादिया के मायापुर, हुगली में महेश और पूर्वी मिदनापुर जिलों में महिषादल में आयोजित किया जाता है. रथ यात्रा के दिन, बलराम और सुभद्रा की मूर्तियों के साथ जगन्नाथ की मूर्ति को 50 फीट ऊंचे रथ पर रखा जाता है, जिसका वजन लगभग 125 टन होता है.

नील कंठ को रथ के शीर्ष पर बिठाया जाता है और जैसे ही वह रथ से उड़ जाता है, जुलूस उत्साह के साथ शुरू होता है. बड़ी संख्या में लोग 'रोशी' नामक लंबी रस्सियों को खींचने के लिए इकट्ठा होते हैं जो पवित्र रथों से बंधी होती हैं. इस पवित्र रस्सी को खींचना बहुत शुभ माना जाता है और भक्त इस भव्य और सदियों पुरानी परंपरा में दृढ़ विश्वास और अपार भक्ति के साथ भाग लेते हैं. रथ यात्रा हमारे देश की सबसे धार्मिक और सबसे पुरानी परंपराओं में से एक है. हर साल, पश्चिम बंगाल में शुभ रथ उत्सव में भाग लेने के लिए लोग बड़ी संख्या में आते हैं.

भारत असंख्य संस्कृतियों का देश है और इसलिए देश के हर हिस्से में त्योहार अद्वितीय हैं. पश्चिम बंगाल एक ऐसा राज्य है जो विशिष्ट और आकर्षक त्योहारों के माध्यम से प्राचीन इतिहास और समृद्ध संस्कृति का दावा करता है.

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि लोकोत्सव वह माध्यम है जिससे सभी धर्म, सम्प्रदाय के लोगों को एक साथ जुड़ने का अवसर मिलता है और अपने संस्कृति से जुड़ने का मौका भी. लोक उत्सव किसी भी प्रदेश की संस्कृति का हिस्सा होते हैं और अपने सांस्कृतिक धरोहर को बनाए रखने में अहम भूमिका निभाते हैं.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

वर्तमान युग में नेतृत्व विकास की चुनौतियां और सम्भावनाएं

- प्रदीप पाटिल
सहायक महाप्रबंधक
एस एस बी, चेन्नई

''नेतृत्व'' जीवन की एक महत्वपूर्ण विधा है. नेतृत्व का प्रभाव हमारे जीवन के व्यक्तिगत, पेशेवर, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर देखा जा सकता है. दरअसल, नेतृत्व एक सामान्य लक्ष्य या उद्देश्य को प्राप्त करने की दिशा में कार्य करने के लिए लोगों के एक समूह को प्रेरित करने की कला या कौशल है.

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तथा डिजीटल प्रवृत्तियों के बढ़ते प्रभाव व विस्तार को देखते हुए, दूसरों की भावनाओं को अधिक सटीक रूप से समझने और अधिक उपयुक्त निर्णय लेने के लिए आज भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्व अत्यंत बढ़ गया है और इस दृष्टि से नेतृत्व कौशल की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है.

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक, लेखक-चिंतक और विज्ञान पत्रकार डैनियल गोलमैन जो भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर एक महान शोधकर्ता भी हैं, उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''इमोशनल इंटेलीजेंट'' में 6 प्रकार की नेतृत्व शैलियां बतायी हैं:

1. **कठोर (कोर्सिव)नेतृत्व** - तत्काल परिणाम या त्वरित कार्रवाई की मांग.
2. **आधिकारिक (अथारिटेटिव) नेतृत्व**- एक समान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए लोगों को एकत्रित करना.
3. **संबद्ध(एफिलिटेटिव) नेतृत्व**- भावनात्मक प्रबंधन और सद्भावपूर्ण सम्बद्धता.
4. **लोकतांत्रिक(डेमोक्रेटिक) नेतृत्व**- सक्रिय भागीदारी के माध्यम से आम सहमति का निर्माण.
5. **गतिशील(पेससेटिंग) नेतृत्व**- अपने कर्मचारियों से उत्कृष्टता और स्वयं उनके द्वारा आत्म दिशा तय करने की उम्मीद.
6. **कोचिंग नेतृत्व**- भविष्य की जरुरतों के लिए लोगों को विकसित करने पर जोर.

उपरोक्त में से तीन शैलियों यथा आधिकारिक, संबद्ध और लोकतांत्रिक नेतृत्व को अधिक सफल नेतृत्व शैलियां माना जाता है.

नेतृत्व कौशल विकसित करने में 4 मुख्य बाधाएं हैं:

1. **स्पष्ट कल्पनाशीलता की कमी:** प्राचीन रोम के प्रसिद्ध दार्शनिक सेनेका कहते हैं-यदि कोई यह नहीं जानता कि वह किस बंदरगाह पर अपने जहाज को ले जाना चाहता है, तो गंतव्य पर पहुंचने के लिए किसी भी प्रकार से हवा की अनुकूलता मदद नहीं कर सकती है. दूसरे शब्दों में कल्पनाशीलता में स्पष्टता की कमी किसी भी व्यवसाय या मिशन के उद्देश्य को बर्बाद कर सकती है. इसलिए स्पष्ट दिशा-बोध आवश्यक है.
2. **अत्यधिक नियंत्रण :** यह नेतृत्व कौशल विकसित करने में एक बड़ी बाधा है. कई नेतृत्वकर्ता स्वतंत्र रुप से अपने अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को कोई महत्वपूर्ण कार्य सौंपने से बचते हैं. यह सूक्ष्म नियंत्रण और प्रबंधन की संस्कृति बनाता व बढ़ाता है तथा रचनात्मकता और स्वतंत्र सोच को विकसित नहीं होने देता. इसके विपरीत प्रभावी नेतृत्वकर्ता कार्य का विकेन्द्रीकरण करते हैं, रोजमर्रा के कार्यों को सम्पन्न करने के लिए अधिकारों और शक्तियों को अपने सहकर्मियों को सौंपते हैं तथा अधिक जटिल और चुनौतीपूर्ण विषयों पर स्वयं ध्यान केंद्रित करते हैं.
3. **अहंकार:** कई बार, नेतृत्वकर्ता श्रेष्ठताग्रंथि और पूर्वाग्रह के शिकार होते हैं और जाने अनजाने इस दुश्चक्र के जाल में फंस जाते हैं. वे विभिन्न पुस्तकों, व्यक्तियों, स्थितियों, उभरती प्रौद्योगिकियों, अपने और अन्य के अनुभवों जैसे महत्वपूर्ण स्रोतों से सीखना बंद कर देते हैं. जबकि निरंतर सीखने की प्रवृत्ति चीजों का ठीक से विश्लेषण करने की क्षमता का विकास करती है. सीखने की प्रवृत्ति का अवरुद्ध होना अपने से भिन्न दृष्टिकोण के प्रति कठोर और आक्रामक बनाती है. इसके विपरीत सबसे अच्छे नेतृत्वकर्ता विनम्र होते हैं. वे जानते हैं कि प्रभावी नेतृत्व का सम्बंध लोगों को प्रेरित करने से है, उन्हें सही मार्ग दिखाने से है, न कि अधिकार जताने या धौंस जमाने से. वे टीम के मूल्यों को पहचानते हैं और टीम के सदस्यों के साथ

सम्मानपूर्वक और बेहतर सामंजस्य के साथ काम करते हैं.

4. **नवाचार (इनोवेशन) की कमी:** 21 वीं सदी की दुनिया में, जिसमें वैश्विकता, डिजिटल, सूचना प्रवाह की सबसे तेज गति और पारदर्शिता है, ऐसे में सर्वज्ञानी या सब कुछ जानने वाले सुपरहीरो की छवि जो अपने अनुयायियों को रेडिमेड उत्तर देती है, उन्हें समाधान और सुरक्षा देती है, आज प्रासंगिक नहीं हो सकती है. वैसे भी ''जीवन'' नेतृत्वकर्ता के लिए हर दिन एक नई चुनौती पैदा करता है जिन्हें सुलझाने के लिए चिर-परिचित रेडिमेड उत्तर समाधानकारक नहीं हो सकते. इसके लिए नेतृत्वकर्ता में नवाचार यानी इनोवेशन का होना अत्यंत आवश्यक है.इसके अभाव में नेतृत्वकर्ता उस नई चुनौती को सुलझा नहीं पाते और इसलिए नवाचार की कमी नेतृत्वकर्ताओं को अप्रासंगिक बना देती है, उन्हें पीछे छोड़ देती है.

विभिन्न अध्ययनों और अनुसंधानों के अनुसार, प्रभावी नेतृत्व की चुनौतियों को दूर करने के मुख्य रूप से चार तरीके प्रकाश में आते हैं जो कि निम्नानुसार हैं:

1. **सकारात्मक सोच और समस्या-समाधान का दृष्टिकोण:** यह किसी भी स्थिति या समस्या की व्यापक रूप से जांच, मूल्यांकन और आंकलन करने और समस्या समाधान की गहन अभीप्सा के माध्यम से चुनौतियों से बाहर आने के लिए उचित निर्णय लेने की क्षमता है जिसके सतत अभ्यास से इस दृष्टिकोण का समुचित विकास किया जा सकता है.

2. **संप्रेषण कौशल:** एक अच्छा नेतृत्वकर्ता एक अच्छा सम्प्रेषक यानी कम्युनिकेटर भी होता है. दिलचस्प बात यह है कि ''प्रभावी संप्रेषण'' बोलने के बारे में कम और सुनने से अधिक सम्बन्धित है. एक अध्ययन के अनुसार ''प्रभावी संप्रेषण'' में सुनने का गुण अपनी 59% भूमिका निभाता है जबकि शेष 41% के अंतर्गत पढ़ना 6%, लिखना 9%, बोलना 26%, शामिल है. यदि नेतृत्वकर्ता सक्रिय-श्रवण यानी एक्टिव लिसनिंग सीखने का अभ्यास करते हैं तो निश्चित रूप से वे लोगों के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ सकते हैं और प्रभावी सम्प्रेषक बन सकते हैं.

3. **परिवर्तन प्रबंधन :** एक पुरानी उक्ति है- ''चेहरा बदलने से कुछ नहीं बदला जा सकता लेकिन बदलाव का सामना करके सब कुछ बदला जा सकता है.'' बदलते परिदृश्यों के अनुसार खुद को बदलने के लिए तैयार नेतृत्वकर्ता किसी भी बेहतर लक्ष्य की तरफ बढ़ सकते हैं. इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि एक गरूड़ के पुनर्जन्म की कहानी जिसमें वह अपने रुपातंरण की प्रक्रिया से गुजरते हुए नए नाखून, पंख और नई चोंच प्राप्त करने के लिए जो तकलीफ और वेदना उठाता है वह मिथक, रूपक या सत्य है. लेकिन इंसान के गुणात्मक रुप से बेहतर बनने के लिए की जाने वाली परिवर्तन यात्रा के दर्द को उस कहानी के माध्यम से ही बेहतर तरीके से समझा और समझाया जा सकता है.

4. **सहानुभूति:** सहानुभूति भावनात्मक और सम्वेदना के स्तर पर दूसरों को समझने का एक सशक्त माध्यम है, यह इस बात को समझने की एक क्षमता है कि अन्य लोग क्या महसूस करते हैं. सहानुभूतिपूर्ण नजरिया रखने वाले व्यक्ति चीजों को अन्य लोगों के दृष्टिकोण से देखते हैं, और उनके स्थान पर खुद की कल्पना करते हैं. वास्तव में ''सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण'' एक नेतृत्वकर्ता को दूसरों के द्वारा बेहतर प्रदर्शन ना कर पाने के पीछे विद्यमान कारणों को समझने में मदद करता है और उसके लिए व्यावहारिक समाधान भी सुझाता है . ''सहानुभूति'' नेतृत्वकर्ताओं को लोगों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाने और विकसित करने में सहायता प्रदान करती है.

प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक ब्रायन हर्बर्ट ने सही कहा है कि ''सीखने की क्षमता एक उपहार है सीखने की योग्यता एक कौशल है, सीखने की इच्छा एक चुनाव है, च्वाइस है. दिलचस्प बात यह है कि नेतृत्व कोई ओहदा नहीं बल्कि यह एक चुनाव है, च्वाइस है और खुद को अद्यतन रखने और सतत विकसित करने की दृष्टि से, एक सच्चा नेतृत्वकर्ता लगातार सीखता रहता है. इसलिए स्पष्ट दिशा-बोध आवश्यक है. विशेषकर डिजीटल युग में लगातार सीखना एक नेतृत्वकर्ता की सफलता और प्रासंगिकता के लिए बेहद जरुरी है .

आज़ादी का अमृत महोत्सव

संक्रांति: आंध्र प्रदेश का लोक उत्सव

- निम्मला नागार्जुन
एकल खिड़की परिचालक
क्षेत्रीय कार्यालय, हुबली

पूरे साल का पहला त्योहार कहा जाने वाला पर्व मकर संक्रांति है. यह एक ऐसा पर्व है, जो देश के लगभग सभी हिस्सों में मनाया जाता है और वो भी भिन्न-भिन्न तरीकों से... मकर संक्रांति का पर्व इस साल 15 जनवरी को मनाया जा रहा है. इस दिन को पतंगबाजी के रूप में मनाया जाता है. हिंदू धर्म में इस पर्व का काफी महत्व है. मकर संक्रांति को भारतीय ज्योतिष और धार्मिक मान्यताओं में बड़ा ही महत्व दिया गया है. कहते हैं इस दिन स्वर्ग के दरवाजे खुलते हैं और देवताओं का दिन आरंभ होता है. दरअसल ऐसी मान्यता है कि धरती लोक का एक साल देवलोक का एक दिन होता है. जब सूर्य उत्तरायण होते हैं तो दिन आरंभ होता है और जब सूर्य दक्षिणायन होते हैं तब रात. इसलिए मकर संक्रांति के दिन जब सूर्य उत्तरायण होते हैं तो धरती लोक पर देवताओं की आराधना की जाती है और उनसे सुख समृद्धि की कामना की जाती है. इसलिए नाम भले ही अलग हैं, लेकिन देश के तमाम भागों में मकर संक्रांति का पर्व उत्साह और श्रद्धा से मनाया जाता है. हिन्दू महीने के अनुसार पौष शुक्ल पक्ष में मकर संक्रांति पर्व मनाया जाता है. इस दिन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है और तभी से सूर्य उत्तरायण हो जाता है. उत्तरायण अर्थात उस समय से धरती का उत्तरी गोलार्द्ध सूर्य की ओर मुड़ जाता है, तो उत्तर ही से सूर्य निकलने लगता है. इसे सोम्यायन भी कहते हैं. 6 माह सूर्य उत्तरायण रहता है और 6 माह दक्षिणायन. अत: यह पर्व 'उत्तरायण' के नाम से भी जाना जाता है. मकर संक्रांति से लेकर कर्क संक्रांति के बीच के 6 मास के समयांतराल को उत्तरायण कहते हैं. यह त्योहार संपूर्ण भारत ही नहीं बल्कि अन्य देशों में भी विभिन्न रूप में मनाया जाता है. इस दिन से वसंत ऋतु की भी शुरुआत होती है और यह पर्व संपूर्ण अखंड भारत में फसलों के आगमन की खुशी के रूप में मनाया जाता है. खरीफ की फसलें कट चुकी होती हैं और खेतों में रबी की फसलें लहलहा रही होती हैं. खेत में सरसों के फूल मनमोहक लगते हैं. मकर संक्रांति के इस पर्व को भारत के अलग-अलग राज्यों में वहां के स्थानीय तरीकों से मनाया जाता है.

माघे मासे महादेव: यो दास्यति घृतकम्बलम.
स भुक्त्वा सकलान भोगान अन्ते मोक्षं प्राप्यति?

इस दिन जप, तप, दान, स्नान, श्राद्ध, तर्पण आदि धार्मिक क्रियाकलापों का विशेष महत्व है. ऐसी धारणा है कि इस अवसर पर दिया गया दान सौ गुना बढ़कर पुन: प्राप्त होता है. इस दिन शुद्ध घी एवं कम्बल का दान मोक्ष की प्राप्ति करवाता है. जैसा कि उपरोक्त श्लोक से स्पष्ट होता है. इस दिन सूर्य अपने पुत्र शनिदेव के घर जाते हैं यानी सूर्य शनि का राशि मकर में प्रवेश करते हैं. इस दिन का बहुत महत्व है. क्योंकि, इस दिन स्वर्ग के दरवाजे खुलते हैं. मकर संक्रान्ति के अवसर पर गंगास्नान एवं गंगातट पर दान को अत्यन्त शुभ माना गया है. इस पर्व पर तीर्थराज प्रयाग एवं गंगासागर में स्नान को महास्नान की संज्ञा दी गयी है. कहा जाता है, गंगा नदी में स्नान कर खिचड़ी खाने और दान करने से सारे पाप कट जाते हैं. सूर्य जब एक राशि से दूसरी राशि में जाते हैं तो सूर्य के राशि परिवर्तन को 'संक्रांति' कहा जाता है. इसलिए जब सूर्य गुरु की धनु से शनि की मकर राशि में प्रवेश करता है, तब इसे ज्योतिषीय भाषा में 'मकर संक्रांति' के नाम से जानते हैं. ज्योतिषशास्त्र में मकर राशि का स्वामी ग्रह शनि देव को बताया है जिनका स्थान नवग्रहों में सातवां है. पुराणों में शनि ग्रह को सूर्यदेव का पुत्र और सूर्य पत्नी छाया की संतान बताया गया है.

एक कथा है कि, शनि की विनती पर सूर्य देव ने शनि महाराज से कहा था कि वह हर वर्ष उनसे मिलने के लिए मकर संक्रांति में आएंगे और इस समय पर शनि एवं उनके उपासकों को संपन्नता एवं सुख प्रदान करेंगे. इसलिए मान्यता के अनुसार हर साल सूर्य देव शनि और अपनी पत्नी छाया से मिलने शनि के घर मकर राशि में आते हैं और पिता पुत्र का संयोग होता है. इस साल मकर संक्रांति के दिन शनि अपनी राशि मकर में सूर्य देव का स्वागत करेंगे, क्योंकि अभी शनि मकर राशि में ही संचार कर रहे हैं. इस दिन से सर्दियों का अंत और गर्मियों की शुरुआत मानी जाती है. कहा

जाता है कि यह एक ऐसी दशा है जो हर साल ग्रिगेरियन कैलेंडर के 14 जनवरी को ही पड़ती है, शायद ही इसमें कभी परिवर्तन देखा जाता है. इस दिन को लेकर कई सारी कथाएं भी बताई जाती है. यह दिन मकर राशि में सूर्य के पारगमन के पहले दिन को चिन्हित करता है, जो शीतकालीन संक्रांति के अंत और लंबे दिनों की शुरुआत को चिह्नित करता है. सामान्यत: सूर्य सभी राशियों को प्रभावित करते हैं, किन्तु कर्क व मकर राशियों में सूर्य का प्रवेश धार्मिक दृष्टि से अत्यन्त फलदायक है. यह प्रवेश अथवा संक्रमण क्रिया छ:-छ: माह के अन्तराल पर होती है. भारत देश उत्तरी गोलार्ध में स्थित है.

सामान्यत: भारतीय पंचांग पद्धति की समस्त तिथियाँ चन्द्रमा की गति को आधार मानकर निर्धारित की जाती हैं, किन्तु मकर संक्रान्ति को सूर्य की गति से निर्धारित किया जाता है. हमारे पवित्र वेद, भगवत गीता भी तथा पूर्ण परमात्मा का संविधान यह कहता है कि यदि हम पूर्ण संत से नाम दीक्षा लेकर एक पूर्ण परमात्मा की भक्ति करें तो वह इस धरती को स्वर्ग बना देगा और सूर्य के मकर राशि में आने से जहां उत्तरायण होता है वहीं धनु राशि से सूर्य के मकर में आने पर एक महीने का खरमास समाप्त हो जाता है और मांगलिक कार्यों जैसे विवाह की तिथियां शुरू हो जाती हैं. सूर्य का उत्तरायण होना शुभता और पुण्य का प्रतीक भी माना जाता है. सांकेतिक रूप से यह भी कह सकते हैं कि मकर संक्रांति से दिन की अवधि बढ़ने से जीवन अंधकार से प्रकाश की ओर गतिशील होता है. सूर्य के उत्तरायण के महत्व को समझने के लिए भीष्म पितामह का उदाहरण ले सकते हैं, जिन्होंने बांणों की शय्या पर अपार कष्ट सहा. लेकिन सूर्य के उत्तरायण होने का इंतजार किया. क्योंकि धार्मिक मान्यता है कि सूर्य के उत्तरायण होने पर शुभ मुहूर्त में प्राण त्यागने से आत्मा को फिर किसी शरीर में प्रवेश करके धरती के सुख दुख और जन्म मरण के चक्र में नहीं फंसना पड़ता है उसे आवागमन से मुक्ति मिल जाती है.

संक्रांति एक प्रमुख त्योहार है, जो समृद्ध तेलुगु संस्कृति पर प्रकाश डालता है. तेलुगु राज्य आंध्र प्रदेश के गाँव और कस्बे, प्रमुख फसल उत्सव को चिह्नित करने के लिए पारंपरिक समारोहों के साथ जीवंत हो उठते हैं. राज्य के सबसे बड़े त्योहारों में से एक को मनाने के लिए राज्य भर में तैयारियां जोरों पर होती है. यह त्योहार आंध्र प्रदेश में पोद्दा पांडुगा के नाम से जाना जाता है. इस त्योहार के साथ ही सर्दी के छोटे दिन खत्म होते हैं और गर्मी के लंबे दिनों की शुरुआत होती है. किसानों के लिए ये दिन खास है क्योंकि वे सर्दी के छोटे दिन खत्म होने के साथ-साथ फसल की कटाई के दिनों की शुरुआत होने का जश्न मकर संक्रांति के रूप में मनाते हैं. आंध्र प्रदेश में शनिवार को संक्रांति समारोह की शुरुआत 'भोगी' या पुराने कपड़े, चटाई और झाड़ू जैसी पुरानी और अवांछित वस्तुओं को जलाने के साथ हुई, इस विश्वास के साथ कि नई चीजें उनके जीवन में प्रवेश करेंगी.

आंध्र प्रदेश में मकर संक्रांति को संक्रांति के नाम से ही जाना जाता है. यहां, इस पर्व को तीन दिनों तक मनाया जाता है. इस दिन पुरानी चीजों को फेंक कर नई चीजें लाई जाती हैं. वहीं, किसान अपने खेतों, गायों और बैलों की पूजा करते हैं और विभिन्न प्रकार के व्यंजन भी बनाए जाते हैं. इस दिन महिलाएं पास-पड़ोसियों और रिश्तेदारों को एलु बेला (ताजे कटे हुए गन्ने, तिल, गुड़ और नारियल के मिश्रण से बनी मिठाई) को बांटकर खुशियां मनाती हैं. इस दौरान घरों में चावल के पकवान, दरवाजे पर रंगोली और भगवान की पूजा की जाती है. युवा बांस, पत्तियों और छप्पर से मेजी नाम की झोपड़ियों का निर्माण करते हैं, जिसमें वे दावत खाते हैं और फिर अगली सुबह उन झोपड़ियों को जला दिया जाता है. गांवों और कस्बों में लोग दिन की शुरुआत 'भोगी' और प्रार्थना के साथ करते हैं. महिलाएं आग के चारों ओर खेलती और नाचती हैं. संक्रांति एक प्रमुख त्योहार है, जो समृद्ध तेलुगु संस्कृति पर प्रकाश डालता है. आंध्र प्रदेश में इसे केवल संक्रांति ही कहते हैं. यह दिन दान और आराधना के लिए महत्वपूर्ण है. मकर संक्रांति से सभी तरह के रोग और शोक मिटने लगते हैं. माहौल की शुष्कता कम होने लगती है. इस दिन उड़द, चावल, तिल, चिवड़ा, गौ, स्वर्ण, ऊनी वस्त्र, कम्बल आदि दान करने का अपना महत्त्व है. महाराष्ट्र में भी इसे संक्रांति कहते हैं. इस दिन महाराष्ट्र में महिलाएं आपस में तिल, गुड़, रोली और हल्दी बांटती हैं.

भारतीय उपमहाद्वीप के अन्य देशों में जैसे बांग्लादेश में पौष संक्रान्ति, नेपाल में माघे संक्रान्ति या खिचड़ी संक्रान्ति, थाईलैण्ड में सोंगकरन, लाओस में पि मा लाओ, म्यांमार में थिंयान, कम्बोडिया में मोहा संगक्रान और श्री लंका में पोंगल एवं उझवर तिरुनल कहते हैं.

संक्रांति त्योहार से जुड़ी कुछ रोचक जानकारी:

रंगोली बनाना

मकर संक्रांति पर बच्चों के साथ त्योहार के जश्न को दोगुना करने

के लिए लोग रचनात्मक होकर तैयारी करते हैं. इस दिन रंगोली बनाना भी एक प्रथा है. रंग-बिरंगी रंगोली को बनाने में बच्चों का इंटेरेस्ट बना रहता है. खासतौर पर लड़कियां इस काम को ज्यादा पसंद करती हैं. अपनी बच्ची के साथ मिलकर घर की एंट्री या चौक पर रंगोली बनाएं.

पतंग उड़ाना

मकर संक्रांति के दिन उत्तर भारत में पतंग उड़ाने की रीत भी निभाई जाती है. रंग-बिरंगी पतंगों को उड़ाना स्पेशल फील कराता है. मार्केट से खरीदने के अलावा घर पर भी रंग-बिरंगी पतंगों को बनाकर लोग आसमान में उड़ाते हैं. पतंग के मांझा में धार होती है और इससे उंगलियां कट सकती है, इसलिए इसे फन को एंजॉय करते समय लोग अपने बच्चे के साथ सतर्क रहते हैं.

पारंपरिक खानपान

भला त्योहार का जश्न मीठे के बिना कैसे मनाया जा सकता है और ख़ासकर बच्चे तो शुगर से बनी चीजों के फैन होते हैं. आजकल मकर संक्रांति पर बच्चों को चॉकलेट या कैंडी के बजाय घरवाले गुड़ की बनी चिक्की या दूसरे मीठे फूड आइटम खिलाते हैं. यह स्वाद उन्हें अच्छा लगता है और वे इसे दोबारा खाने की संक्रांति त्योहार के बीत जाने के कई दिनों के बाद भी डिमांड करते हैं.

प्रकृति प्रेम

युवा प्राकृतिक बांस, पत्तियों और छप्पर से मेजी नाम की झोपड़ियों का निर्माण करते हैं, जिसमें वे खाना खाते हैं. पवित्र नदी में स्नान करने का तथा सूर्य को अर्घ्य देने का महत्व है. खेत में खरीफ की फसलें कट चुकी होती हैं और खेतों में रबी की फसलें लहलहा रही होती हैं.

गीता सार

क्यों व्यर्थ की चिंता करते हो? किससे व्यर्थ डरते हो? कौन तुम्हें मार सकता है? आत्मा ना पैदा होती है, न मरती है.

जो हुआ, वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है, वह अच्छा हो रहा है, जो होगा, वह भी अच्छा ही होगा. तुम भूत का पश्चाताप न करो. भविष्य की चिन्ता न करो. वर्तमान चल रहा है.

तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो? तुम क्या लाए थे, जो तुमने खो दिया? तुमने क्या पैदा किया था, जो नाश हो गया? न तुम कुछ लेकर आए, जो लिया यहीं से लिया. जो दिया, यहीं पर दिया। जो लिया, इसी (भगवान) से लिया। जो दिया, इसी को दिया.

खाली हाथ आए और खाली हाथ चले. जो आज तुम्हारा है, कल और किसी का था, परसों किसी और का होगा. तुम इसे अपना समझ कर मग्न हो रहे हो. बस यही प्रसन्नता तुम्हारे दु:खों का कारण है.

परिवर्तन संसार का नियम है। जिसे तुम मृत्यु समझते हो, वही तो जीवन है. एक क्षण में तुम करोड़ों के स्वामी बन जाते हो, दूसरे ही क्षण में तुम दरिद्र हो जाते हो. मेरा-तेरा, छोटा-बड़ा, अपना-पराया, मन से मिटा दो, फिर सब तुम्हारा है, तुम सबके हो.

न यह शरीर तुम्हारा है, न तुम शरीर के हो. यह अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश से बना है और इसी में मिल जायेगा. परन्तु आत्मा स्थिर है - फिर तुम क्या हो?

तुम अपने आपको भगवान को अर्पित करो. यही सबसे उत्तम सहारा है. जो इसके सहारे को जानता है वह भय, चिन्ता, शोक से सर्वदा मुक्त है.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

डिजिटल युग में कंप्यूटर अनुवाद का योगदान

- डॉ. सुमेध हाडके
सहायक प्रबन्धक
क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी

डिजिटल युग में सूचना का संप्रेषण बहुत तेजी से हो रहा है. विश्व में सूचना के संचार से आज 'विश्व ग्राम' की संकल्पना सामने उभरकर आयी है जिसमें दुनिया के सभी देश एक दूसरे देशों के साथ सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़े हुए हैं जिससे उन्हें नई जानकारी तुरंत मिल रही है. भाषा अपने मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है. आज किसी भी देश की प्रगति बिना भाषा के विकास से नहीं हो सकती है. इसलिए भाषा के विकास के लिए सम्पूर्ण दुनिया में सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं. इसे अधिक विस्तार से देखें तो पाया जाता है कि विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी, चिकित्सा, अंतरिक्ष, शिक्षा, अर्थव्यवस्था और जनसंचार आदि विषय-क्षेत्रों से संबंधित जानकारी अधिकतर अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध होती है. अब इन सूचनाओं को विश्व की सभी स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध कराना आवश्यक हो गया है ताकि कोई भी देश नई जानकारी से अनभिज्ञ न रहें. वर्तमान में इस दिशा में प्रगति करने के लिए दुनिया की बहुत सी कंपनिया अपने उत्पादों को बेचने के लिए वहाँ की स्थानीय भाषा को टार्गेट कर रही है, जिससे उनके उत्पाद आसानी से बेचे जाएं और कंपनी का उत्पादन भी बढ़े. इन प्रक्रिया में अनुवाद एक सेतु की तरह कार्य रहा है. अनुवाद में एक भाषा की पाठ्यसामग्री का दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है.

भारत एक बहुभाषिक देश है. यहां संविधान स्वीकृत 22 भाषाएँ हैं. आज इन सभी भाषाओं में उपलब्ध कला, साहित्य एवं संस्कृति को जानना अनुवाद के चलते संभव हो पाया है. अनुवाद की यह प्रक्रिया बहुत पुरानी है, लेकिन वर्तमान में मनुष्य के द्वारा अनुवाद करना काफी श्रमसाध्य और समय खर्च करने वाला रहा है. इसलिए अनुवाद कार्य को सरल बनाने और मानव की सहायता के लिए विश्व स्तर पर 'कंप्यूटर अनुवाद' का विकास हुआ है. भारत भी इस क्षेत्र में प्रगति करते हुए सरकार की ओर से भाषा के तकनीकी विकास और कंप्यूटर अनुवाद सॉफ्टवेयर निर्माण के लिए कार्य कर रहा है. *कंप्यूटर अनुवाद से तात्पर्य कंप्यूटर में समावेशित अनुवाद सॉफ्टवेयर के माध्यम से दूसरी भाषा में अनुवाद से है जिसे कंप्यूटर अनुवाद भी कहते हैं.*

कंप्यूटर अनुवाद में कंप्यूटर की सहायता से एक भाषा की पाठ्य सामग्री का अनुवाद दूसरी भाषा में स्वचालित रूप से होता है. यह अ नुवाद कंप्यूटर में स्टोर की गई मेमोरी और उसमें संचालित किए गए प्रोग्रामिंग के द्वारा होता है. इस प्रक्रिया के लिए द्विभाषी वाक्य, व्याकरणिक नियम, द्विभाषी शब्दकोश, व्याकरणिक जांचक तथा एल्गोरिदम को कंप्यूटर के डेटाबेस में संग्रहित किया जाता है और उससे अनुवाद होता है. इन कंप्यूटर अनुवाद प्रणालियों का उपयोग प्रशासन, बैंकिग, उद्योग-व्यापार, सूचना प्रौद्योगिकी, विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्रों का अनुवाद करने के लिए अधिक किया जा रहा हैं. इसी आधार पर नीचे विस्तार से वैश्विक स्तर और भारत में विकसित कंप्यूटर अनुवाद प्रणालियों का विवरण दिया गया है जो अलग-अलग भाषाओं के साथ विभिन्न विषय क्षेत्रों में अनुवाद कर रहे हैं.

गूगल अनुवाद (Google Translate)

गूगल अनुवाद, बहुभाषी कंप्यूटर अनुवाद सॉफ्टवेयर है, जिसे गूगल इन्कार्पोरेशन ने विकसित किया है. यह विश्व की 109 भाषाओं में टेक्स्ट टू स्पीच, और स्पीच टू टेक्स्ट तथा वेब साइट का अनुवाद करता है. इसमें भारत की प्रमुख 11 भाषाओं हिंदी, बांग्ला, गुजराती, कन्नड, तमिल, तेलुगू, मराठी, पंजाबी, सिंधी, उर्दू और ओडिया का समावेश है. यह सांख्यिकीय कंप्यूटर अनुवाद पर आधारित अनुवाद साफ्टवेयर है जिसका प्रारंभ अंग्रेजी से अरबी में अनुवाद के लिए हुआ था और आज यह विश्व की अधिकांश भाषाओं में अनुवाद कर रहा है. गूगल अनुवाद सबसे अधिक प्रयोग किए जाने वाला और तुरंत अनुवाद करने वाला सॉफ्टवेयर है. यह सॉफ्टवेयर प्रशासनिक दस्तावेज, मनोरंजन, कृषि, राजनीति, विज्ञान और प्रौद्योगिकी तकनीकी, कला एवं संस्कृति, पर्यटन, स्वास्थ्य, खेल-कूद, अर्थव्यवस्था, बैंकिग आदि विषय-क्षेत्रों का अनुवाद सही करता है. यदि अनुवाद के लिए छोटा

पैरा और तकनीकी विषय से संबंधित सामग्री दी जाए, तो अनुवाद 85 प्रतिशत सही होता है.

माइक्रोसॉफ्ट ट्रान्सलेटर (Microsoft Translator)

यह बहुभाषाई अनुवाद सॉफ्टवेयर है जिसे 'माइक्रोसॉफ्ट' ने विकसित किया है. यह दुनिया का दूसरे नंबर में प्रयोग किए जाने वाला सॉफ्टवेयर है. यह विश्व की 91 भाषाओं का अंग्रेजी के साथ द्विभाषी अनुवाद करता है. इसमें भारत की 12 भाषाओं में हिंदी, आसामी, बंगाली, पंजाबी, गुजराती, कन्नड, मलयालम, ओडिया, तमिल, तेलुगू और उर्दू का समावेश है. इस सॉफ्टवेयर के द्वारा किसी एक भाषा के पाठ (टेक्स्ट) वाक् (स्पीच) एवं वेबपेज का दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है. इस सॉफ्टवेयर से प्रत्येक दिन 10 लाख पृष्ठों का अनुवाद किया जाता है. यह सॉफ्टवेयर प्रशासन, वाणिज्य, परिवहन, कृषि, स्वास्थ्य और प्रौद्योगिकी विषयों का अनुवाद सही करता है. फिर भी इससे प्राप्त अनुवाद पूर्ण रूप से सही नहीं कहा जा सकता, यह 75 प्रतिशत अनुवाद सही करना है. इससे लोगों के समय और पैसे में बचत हो रही है. यह सॉफ्टवेयर अनुवाद न होने वाले शब्द को लिप्यंतरित कर देता है.

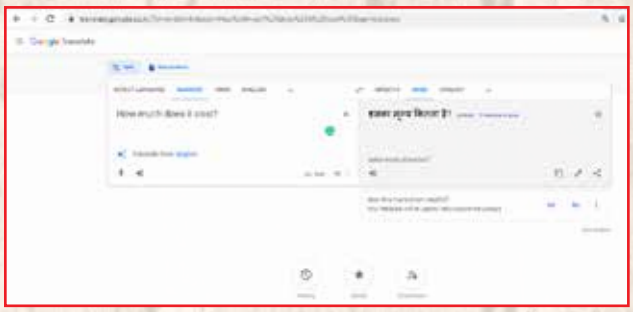

याहू बेबेल फिश (Yahoo Babel Fish)

याहू बेबेल फिश यह अल्टा विस्टा (AltaVista) द्वारा विकसित याहू वेबसाइट पर वेब आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर है. यह सॉफ्टवेयर विश्व की प्रमुख 38 भाषाओं के साथ अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करता है. यह एक भाषा के पाठ का या वेबपेज़ का दूसरी भाषा में अनुवाद करता है. इस सॉफ्टवेयर का निर्माण ऑस्कर ए. जोफ्र और उनकी टीम ने जनवरी, 1995 में किया था. जिसका प्रयोग डगलस एडम्स की श्रृंखला 'The Hitchhikers Guide to the Galaxy' के तत्कालिक भाषिक अनुवाद के लिए किया जाता था. जून 2013 से यह सॉफ्टवेयर माइक्रोसॉफ्ट बिंग के लिए कार्य कर रहा है. इस सॉफ्टवेयर से अनुवाद सही और सटीक होता है.

भारत के प्रमुख कंप्यूटर अनुवाद सॉफ्टवेयर

भारत में स्थानीय भाषाओं का विकास करने के उद्देश्य से कंप्यूटर अनुवाद के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा विभिन्न संस्थाओं एवं विश्वविद्यालयों के माध्यम से अनेक उपकरणों एवं सॉफ्टवेयर का निर्माण किया जा रहा है. इसमें द्विभाषी वाक्यों का संकलन, द्विभाषिक कोश, शब्द संसाधक, विच्छेदक, रूपवैज्ञानिक विश्लेषक, प्रजनक, वर्तनी जाँचक, और वाक् प्रौद्योगिकी आदि का समावेश है, जिसमें निम्न कंप्यूटर अनुवाद सॉफ्टवेयर सुचारु रूप से कार्य कर रहे हैं.

आंग्लभारती

आंग्लभारती परियोजना का प्रांरभ प्रो. आर.एम.के.सिन्हा के निर्देशन में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर में हुआ था. जिसका प्रयोग अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद के लिए किया गया था. बाद में इसका प्रयोग अंग्रेजी से भारतीय भाषाओं में अनुवाद के लिए किया गया था. यह सॉफ्टवेयर नियम आधारित प्रणाली (Rule Based system) का प्रयोग करते हुए स्वास्थ्य सेवाओं तथा सामान्य विषयों का अनुवाद करता है. इस सॉफ्टवेयर में स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद के लिए Pseudo - interlingua (Pseudo Lingua for Indian Languages) प्रणाली, सेन्स डिसैम्बिग्युएटर्स, लक्ष्य पाठ्य प्रजनक, बहुभाषिक शब्दकोश और नियम आधारित अधिग्राहक आदि घटकों का समावेश किया है. फिर इस परियोजना को सी-डैक नोएडा में स्थानांतरित किया गया जिसे आंग्लभारती द्वितीय कहा जाता है.

अनुसारक

प्रो. राजीव संगल के निर्देशन में आई.आई.टी. कानपुर ने 'अनुसारक' कंप्यूटर अनुवाद सॉफ्टवेयर परियोजना की शुरूआत की. बाद में इस परियोजना को आई.आई.आई.टी., हैदराबाद में स्थानांतरित किया गया है. इस सॉफ्टवेयर में पाणिनीय व्याकरण के सिद्धान्तों का प्रयोग कर भारतीय भाषाओं में अनुवाद को उन्नत बनाने का कार्य किया गया है. यह स्रोत भारतीय भाषा के पाठ को लक्ष्य भारतीय भाषा के निकटतम और ग्राह्य रूप में अनूदित करता है. यह सॉ

फ्टवेयर तेलुगू, कन्नड़, बांग्ला, मराठी, और पंजाबी से हिंदी भाषा में अनुवाद करता है. इस सॉफ्टवेयर का प्रयोग सामान्य अनुवाद और बच्चों की कहानियों का अनुवाद करने के लिए किया जाता है.

अणुभारती

आई.आई.टी.,कानपुर की दूसरी परियोजना 'अणुभारती' है. इसका विकास प्रो.आर.एम.के. सिन्हा के निर्देशन में हिंदी से अंग्रेजी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद के लिए किया था. यह उदाहरण आधारित प्रणाली पर आधारित है, जिसमें स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में उदाहरण आधारित कॉर्पोरा के माध्यम से अनुवाद किया जाता है. साथ ही ये सॉफ्टवेयर दोनों भाषा के वाक्यों का अनुवाद शब्द स्तर पर करता है. उदाहरण आधारित प्रणाली से हिंदी वाक्य को पदबंध के अनुसार विश्लेषण कर वाक्य संरचना के क्रम में की जाती है. साथ ही हिंदी के मानकीकृत वाक्य को अनूदित वाक्य के साथ संयोजित किया जाता है. इसकी दूसरी परियोजना उदाहरण आधारित एवं कार्पस आधारित संरचना और व्याकरण विश्लेषण के संयोजन से बनी है.

मंत्र-राजभाषा

मंत्र-राजभाषा को सी-डैक, पुणे के एप्लाइड आर्टिफिशियल इंटैलीजेंस ग्रुप ने विकसित किया है. इसमें अंग्रेजी से हिंदी व्याकरण, पद-विच्छेदन तथा वाक्य प्रजनन के लिए कोशीयकृत वृक्ष संलग्न व्याकरण (प्रो. अरविंद जोशी, पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय, अमेरिका) का प्रयोग किया गया है. भारत सरकार के गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के अधीन राजभाषा और प्रशासनिक दस्तावेजों का अनुवाद करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है. इस सॉ फ्टवेयर से राजभाषा के प्रशासनिक तथा कृषि, बैंकिंग, शिक्षा, वित्त, स्वास्थ्य, सुरक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी आदि विषय-क्षेत्रों का अनुवाद अंग्रेजी से हिंदी में किया जाता है. वर्तमान में अन्य भाषाओं में इसके विकास के लिए प्रयास जारी है. यह सॉफ्टवेयर ऑनलाइन रूप में https://mantra-rajbhasha.R-aai.in/ पर उपलब्ध है.

आंग्लहिंदी

आंग्लहिंदी यह अंग्रेजी से हिंदी मशीन साधित कंप्यूटर अनुवाद सॉफ्टवेयर है. जिसके निर्माण में आंग्लभारती मॉड्यूल का प्रयोग किया गया है. संज्ञा पदबंध और क्रिया पदबंध के सही और सटीक अनुवाद के लिए इसमें नियम आधारित, उदाहरण आधारित और सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है. यह सॉफ्टवेयर 20 शब्दों तक के सरल, जटिल और मिश्रित वाक्य का अनुवाद कर सकता है. अनुवाद प्राप्ति के बाद इसमें पश्च संपादन की आवश्यकता होती है. अगर कोई अज्ञात शब्द शब्दकोश में नहीं मिलता है और जहाँ वर्तनी की गलतियाँ होती है, उसे यह हिंदी (देवनागरी) में लिप्यंतरित करता है. इसमें वाक्य की पहचान के लिए अंग्रेजी ओसीआर के साथ पाठ से वाक प्रणाली का समावेश भी किया गया है.

मात्रा

मात्रा यह पूर्णत: स्वचालित अंग्रेजी से हिंदी मशीन अनुवाद सॉफ्टवेयर है. इसे राष्ट्रीय सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी केंद्र, मुंबई ने विकसित किया है. वर्तमान में इस पर सी-डैक मुंबई में कार्य चल रहा है. मात्रा ने प्राकृतिक भाषा विश्लेषण की पारंपरिक समस्याओं पर अभिनव दृष्टिकोण अपनाते हुए नई फ्रेम संरचित प्रणाली का प्रयोग किया है. यह सॉफ्टवेयर वाक्यों का अर्थपरक विश्लेषण करने के साथ सामान्य क्षेत्र, समाचारों, वार्षिक प्रतिवेदनों और तकनीकी शब्दों का अनुवाद करता है.

अनुवादक (Anuvaadak)

नई दिल्ली की एक निजी संस्था सुपर इन्फोसाफ्ट ने श्रीमती अंजली राव चौधरी के निर्देशन में अनुवादक 5.0 सॉफ्टवेयर का विकास किया है जिसका प्रयोग सामान्य प्रयोजनार्थ अंग्रेजी के सरल वाक्यों का हिंदी अनुवाद करने के लिए किया जाता है. इसमें कार्यालयी, प्रशासन, कृषि, भाषा विज्ञान, तकनीकी आदि विषय-क्षेत्रों के अंग्रेजी-हिंदी शब्दावली और पदबंधीय कोश का समावेश किया गया है. इससे अंग्रेजी दस्तावेजों का वाक्य-विन्यास कर हिंदी व्याकरण के नियमों के अनुसार हिंदी में अनुवाद किया जाता है. इस सॉफ्टवेयर में दिए गए शब्दकोश में नए शब्दों को जोड़ने, बदलने तथा वर्तनी जांचने की सुविधा उपलब्ध है.

कंठस्थ - स्मृति आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर

ट्रांसलेशन मेमोरी (टी.एम.) मशीन-साधित अनुवाद प्रणाली का एक भाग है जिससे अनुवाद करना अब और आसान हो रहा है. ट्रांसलेशन मेमोरी वस्तुत: एक डेटाबेस है जिसमें स्रोत भाषा

(Source language) के वाक्यों एवं लक्षित भाषा (Target language) में उन वाक्यों के अनुवादित रूप को एक-साथ रखा जाता है. ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित इस सिस्टम की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में किए गए अनुवाद को किसी नई फाइल के अनुवाद के लिए पुन:-प्रयोग कर सकता है. यदि अनुवाद की नई फाइल का वाक्य टी.एम. के डेटाबेस से पूर्णत: अथवा आंशिक रूप से मिलता है तो यह सिस्टम उस वाक्य का अनुवाद टी.एम. के माध्यम से देता है. टी.एम. एक सामूहिक डेटाबेस है जोकि राजभाषा विभाग के सर्वर पर उपलब्ध है. ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित यह सिस्टम भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग के लिए विकसित किया गया है. इस सिस्टम के माध्यम से अंग्रेजी से हिंदी तथा हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद संभव है.

द्विभाषी बंगाली कंप्यूटर अनुवाद सॉफ्टवेयर

द्विभाषिक बंगाली-आसामी स्वचालित कंप्यूटर अनुवाद सॉफ्टवेयर का निर्माण समाचार पाठ के अनुवाद के लिए किया गया है. इसमें उदाहरण आधारित मशीन अनुवाद प्रणाली का प्रयोग किया गया है. जिसमें वाक्यों के अनुवाद के लिए पूर्व-संसाधित तथा पश्च संपादित किया जाता है. सही और गुणवत्तापूर्ण अनुवाद के लिए वाक्य अगर बड़े हैं तो विराम चिन्ह द्वारा उसे खंडित किया जाता है और वाक्य स्तर पर सरल अनुवाद किया जाता है.

अंग्रेजी-कन्नड़ कंप्यूटर अनुवाद सॉफ्टवेयर

यह मशीन साधित अनुवाद सॉफ्टवेयर है. जिसे हैदराबाद विश्वविद्यालय के डॉ. के. नारायण मूर्ति ने अंग्रेजी से कन्नड़ में अनुवाद करने के लिए विकसित किया है. इसमें अंतरण आधारित दृष्टिकोण का प्रयोग, सरकारी परिपत्रों के अनुवाद के लिए किया जाता है. इसमें द्विभाषी शब्दकोश, रूपवैज्ञानिक विश्लेषक के द्वारा कन्नड़ में अनुवाद किया जाता है.

यूएनएल-अंग्रेजी-हिंदी मशीन अनुवाद सॉफ्टवेयर

'यूनिवर्सेल नेटवर्किंग लैंग्वेज' यह संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय, टोकियो की अंतरराष्ट्रीय परियोजना है, जिसका उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय स्तर की सभी भाषाओं को अंतरभाषा के माध्यम से विकसित करना है. ळञ्श के माध्यम से अंग्रेजी से हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषाओं से जोड़ने के लिए आई.आई.टी., मुंबई इस परियोजना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है. प्रो.पुष्पक भट्टाचार्या अंग्रेजी से मराठी और बांग्ला भाषाओं में कंप्यूटर अनुवाद सॉफ्टवेयर निर्माण के लिए प्रयास कर रहे हैं. यह सॉफ्टवेयर सामान्य विषय-क्षेत्रों का अनुवाद करता है. यह सॉफ्टवेयर http://www.cfilt.iitb.ac.in/machine-translation/eng-hindi-mt/ पर उपलब्ध है.

'अनुबाद' कंप्यूटर अनुवाद सॉफ्टवेयर

जादवपुर विश्वविद्यालय ने समाचार पत्रो के शीर्षकों का अंग्रेजी से बंगाली में अनुवाद के लिए संकरित दृष्टिकोण पर आधारित सॉफ्टवेयर का निर्माण किया है. यह सॉफ्टवेयर समाचार के शीर्षकों का अनुवाद ज्ञान आधार और उदाहरण संरचना के आधार पर करता है.

हिंग्लिश (Hinglish)

यह सॉफ्टवेयर हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद करता है, इसे प्रो. सिन्हा और ठाकुर ने विकसित किया है. इसे विकसित करने के लिए अंग्रेजी से हिंदी आंग्लभारती (II) और हिंदी से अंग्रेजी अनुभारती (II) प्रणाली का प्रयोग किया गया है. हिंग्लिश से प्राप्त किया जाने वाला अनुवाद अधिकांश स्वीकार्य होता है. यह सॉफ्टवेयर बहुअर्थक क्रियापदों के अर्थ को हल करने में पूर्ण रूप से सक्षम नहीं है.

आई.बी.एम (IBM) अंग्रेजी-हिंदी कंप्यूटर अनुवाद सॉफ्टवेयर

आई.बी.एम (International Business Machines) रिसर्च इंडिया ने इसका निर्माण किया है. प्रथम यह सॉफ्टवेयर उदाहरण आधारित दृष्टिकोण पर था बाद में इसे सांख्यिकीय दृष्टिकोण (Statistical) में परिवर्तित किया गया. इससे अंग्रेजी से अन्य भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर अनुवाद करने के लिए विकसित किया जा रहा है.

तमिल-हिंदी अनुसारक एवं अंग्रेजी-तमिल कंप्यूटर अनुवाद सॉफ्टवेयर

इसे प्रो. सी.एन.कृष्णन के निर्देशन में के.बी.चन्द्रशेखर शोध केन्द्र, अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई में विकसित किया है. तमिल से हिंदी में अनुवाद के लिए इस सॉफ्टवेयर में द्विभाषी शब्दकोश, रूपवैज्ञानिक विश्लेषक, सम्मिलक इकाई और प्रजनक आदि घटकों का समावेश किया है. इसी शोध केंद्र ने अंग्रेजी-तमिल मशीन साधित अनुवाद सॉफ्टवेयर को विकसित किया है.

असमिया कंप्यूटर अनुवाद सॉफ्टवेयर

आई.आई.टी. गुवाहाटी ने अंग्रेजी से असमिया कंप्यूटर अनुवाद सॉ फ्टवेयर को विकसित किया है. यह सॉफ्टवेयर मूलत: नियम आधारित है जो अंग्रेजी से असमिया द्विभाषिक शब्दकोश के आधार पर अनुवाद करता है. यह अंग्रेजी से अनुवाद करते समय इनपुट वाक्य का रूपवैज्ञानिक, वाक्यगत और अर्थ के स्तर पर विश्लेषण करता है. फिर अनुवाद की प्रक्रिया स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में शब्द प्रति शब्द और पद से पद शब्दकोश के माध्यम से होती है.

ओडिया कंप्यूटर अनुवाद सॉफ्टवेयर

इस सॉफ्टवेयर को उत्कल विश्वविद्यालय की डॉ. संघमित्रा मोहंती ने विकसित किया है. यह अंग्रेजी से ओड़िया में अनुवाद करता है. अनुवाद के लिए ओड़िया ई-शब्दकोश, ओड़िया वर्डनेट, वर्तनी जाँचक, रूपवैज्ञानिक विश्लेषक और शब्द-संसाधक आदि उपकरणों का विकास किया जा रहा है.

संपर्क

इस सॉफ्टवेयर का विकास सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद के लिए किया जा रहा है. इस परियोजना के विकास कार्य में 11 विश्वविद्यालयों, संस्थानों तथा केंद्रों का समावेश है. यह सॉफ्टवेयर 9 स्थानीय भारतीय भाषाओं में अनुवाद करता है. संपर्क में, भाषा के विश्लेषण के लिए पाणिनी व्याकरण का प्रयोग कर मशीन लर्निंग को भी इसमें जोड़ा गया है. इसमें पारंपरिक नियम, शब्दकोश आधारित एल्गोरिदम के साथ सांख्यिकी का प्रयोग मशीन को सीखने के लिए किया गया है.

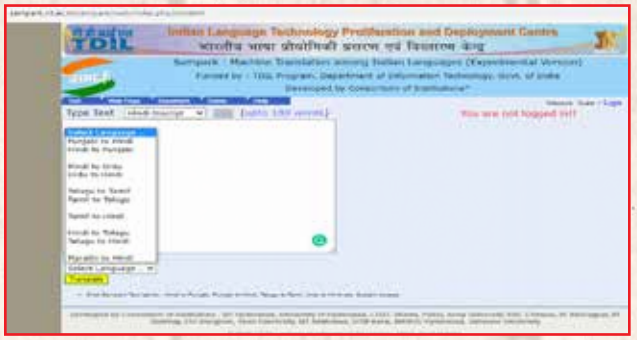

पंजाबी से हिंदी कंप्यूटर अनुवाद सॉफ्टवेयर

इस सॉफ्टवेयर को प्रो. जोसन और लेहल (Josan and Lehal) के निर्देशन में पंजाब विश्वविद्यालय, पटियाला में विकसित किया गया है. इसमें शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद के लिए विभिन्न स्रोतों का प्रयोग किया जाता है. जैसे- धातु कोश, रूपप्रक्रियात्मक कोश, संदिग्धार्थक शब्दकोश आदि का समावेश है. अनुवाद मॉड्यूल्स वाक्य की विभिन्न वाक्यगत संरचनाओं में नामीय पद अभिज्ञान, शब्द आशय विसंदिग्धक, पुनरावृत्ति, लिप्यंतरण आदि का प्रयोग करते हैं.

लीला सॉफ्टवेयर

सी-डैक पुणे के AAI (एप्लाइड आर्टिफिसियल इंटैलिजेन्स) ग्रुप द्वारा लीला सॉफ्टवेयर को विकसित किया गया है. Leela (Learning Indian Languages Through Artificial Intelligence) का अर्थ है कृत्रिम बुद्धि की सहायता से भारतीय भाषाओं का अधिगम कार्यक्रम है. इसमें हिंदी पाठ्यक्रम 'प्रबोध', ' प्रवीण' और 'प्राज्ञ' उपलब्ध है. यह सॉफ्टवेयर विभिन्न सरकारी कर्मचारियों को कक्षा शिक्षण तथा दूरस्थ शिक्षण प्रणाली द्वारा हिंदी शिक्षण देना है. यह कार्यक्रम विशेषत: उन कर्मचारियों के लिए उपयोगी है जो नियमित रूप से कक्षा में उपस्थित रहकर हिंदी सीख पाने में असमर्थ हैं. आज यह सॉफ्टवेयर कार्यक्रम सभी कर्मचारियों को ऑनलाइन रूप में शिक्षा दे रहा है.

भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर अनुवाद की दिशा में अन्य भी सॉफ्टवेयर कार्य कर रहे हैं. ज.ने.वि., नई दिल्ली के संस्कृत अध्ययन केन्द्र के शोधार्थी ने संस्कृत सुबंत विश्लेषक का विकास किया है. बंगाली से हिंदी में कंप्यूटर अनुवाद सॉफ्टवेयर आई.आई.टी. खड़गपुर ने विकसित किया है. अंग्रेजी से मणिपुरी कंप्यूटर अनुवाद सॉफ्टवेयर के लिए शिवाजी बंद्योपाध्याय के निर्देशन में जाधवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता में कार्य चल रहा है. इसी तरह अन्य कंप्यूटर अनुवाद सॉ फ्टवेयर का विकास विश्वविद्यालयों, संस्थानों, निजी कंपनियों के द्वारा किया जा रहा है, जिससे मनुष्य को अनुवाद में सहायता मिल रही है.

निष्कर्षत: विश्व स्तर पर तथा भारत में कंप्यूटर अनुवाद के अनेक सॉफ्टवेयर का निर्माण किया गया है, लेकिन अनुवाद में गुणवत्ता का अभाव रहा है. वास्तव में कंप्यूटर अनुवाद सीमित क्षेत्र के विषयों में अनुवाद करने के लिए सक्षम है. अधिकतर कार्यालयीन और प्रशासनिक दस्तावेजों का अनुवाद करने के लिए ये सॉ फ्टवेयर सक्षम है. लेकिन जब साहित्य के अनुवाद की बात आती है तो अनुवाद में अक्सर गलतियाँ होती हैं और अनुवाद में संदिग्धता उत्पन्न होती हैं. इसलिए कंप्यूटरविदों और भाषाविदों को इस क्षेत्र में अधिक कार्य करने होंगे ताकि मशीन द्वारा सही अनुवाद प्राप्त हो. सरकार की तरफ़ से भी विविध परियोजनाएं चलायी जा रही हैं. भविष्य के लिए यह संभावना दर्शायी जा सकती है कि प्रत्येक भारतीय भाषा में कंप्यूटर अनुवाद सॉफ्टवेयर विकसित होंगे, जो अनुवाद सही और गुणवत्तापूर्ण करेंगे.

राजभाषा गतिविधियां

मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा दिनांक 10.10.2022 को आयोजित हिन्दीतर भाषी हिन्दी सेवी सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में म.प्र. के पूर्व मुख्य सचिव श्री कृपा शंकर शर्मा जी एवं अध्यक्ष श्री सुखदेव प्रसाद दुबे, उपाध्यक्ष श्री रघुनंदन शर्मा, मंत्री संचालक श्री कैलाश चन्द्र पन्त एवं कार्यवाहक मंत्री संचालक डॉ सुरेंद्र बिहारी गोस्वामी जी की गरिमामय उपस्थिति में श्री बी. आर रामा कृष्णा नायक, क्षेत्रीय प्रमुख - भोपाल को हिन्दीतर भाषी हिन्दी सेवी सम्मान से सम्मानित किया गया.

आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी को वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), गुवाहाटी द्वारा ''द्वितीय'' पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, हुबली को नराकास हुबली द्वारा वर्ष 2021-22 के लिए उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु राजभाषा शील्ड (तृतीय स्थान) से सम्मानित किया गया.

आंचलिक कार्यालय चेन्नई के हिन्दी माह पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर वयोवृद्ध लेखक एवं गीतकार श्री टी ई एस राघवन का सम्मान करते हुए श्री व्ही. व्ही. नटराजन, अंचल प्रमुख, चेन्नई.

नराकास (बैंक) दिल्ली द्वारा आंचलिक कार्यालय दिल्ली को वर्ष 2021-22 के लिए उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए अंचल प्रमुख श्री जे एस साहनी और मुख्य प्रबंधक श्री अशोक तनेजा.

नोएडा शाखा को बैंक नराकास (नोएडा) द्वारा वर्ष 2021-22 के लिए उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

दिनांक 11.11.2022 को बैंक नराकास, कोलकाता की बैठक में भारत सरकार की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए आंचलिक कार्यालय, कोलकाता को चतुर्थ पुरस्कार प्रदान किया गया.

दिनांक- 28.12.2022 को आंचलिक कार्यालय में राजभाषा सम्मेलन के दौरान राजभाषा कक्ष द्वारा निर्मित राजभाषा स्लोगन का पोस्टर विमोचन करते हुए, मध्य में अंचल प्रमुख श्री एस.के.गुप्ता, उनके बायी ओर उप अंचल प्रमुख श्री अजीत सिंह एवं श्री राजीव वार्ष्णेय सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा

दिनांक १४.१०.२०२२ को केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह की कुछ झलकियां.

दिनांक १४.१०.२०२२ को केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह की कुछ झलकियां.

हमारे विभिन्न अंचलों द्वारा हिंदी दिवस समारोह का आयोजन

दिल्ली

पुणे

भोपाल

गुवाहाटी

हैदराबाद

कोलकाता

हमारे विभिन्न अंचलों द्वारा हिंदी दिवस समारोह का आयोजन

पटना

मुंबई

लखनऊ

अहमदाबाद

चंडीगढ़

चेन्नै

राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2022-23 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्य विवरण	''क'' क्षेत्र	''ख'' क्षेत्र	''ग'' क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 100% 2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 100% 3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 65% 4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 100%	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 90% 2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 90% 3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 90%	1. 'ग' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 55% 2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 55% 3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	50%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों	40%	30%	20%
		(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, ''क'' क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, ''ख'' क्षेत्र में 25% और ''ग'' क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए		

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India

Azadi Ka Amrit Mahotsav

G20

अपनी नन्ही कली का भविष्य सुरक्षित कीजिये

SUKANYA SAMRIDDHI YOJANA

आईटी अधिनियम की धारा 80 सी
के तहत 1.5 लाख तक की कटौती अनुमत है

जमा सम्बंधी जानकारी हेतु हमें **922 350 2222** पर मिस्ड् कॉल दें

www.centralbankofindia.co.in